हरिभूमि
भिवानी-दादरी भूमि
रोहतक, रविवार 4 जनवरी 2026

11 कलश यात्रा के साथ मास परायण श्री राम कथा का ...

12 संघ कार्यालय में मनाई गई सावित्रीबाई फुले की जयंती

चरखी दादरी में पहली बार अनुभवी एवं सुशिक्षित (M.B.B.S.) चिकित्सक द्वारा
एक कदम मानवता की ओर बढ़ाते हुए नर सेवा नारायण सेवा के भाव से
कलावती हॉस्पिटल
डे-केयर
सभी क्षेत्रवासियों को नववर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं
आमजन मानस की सुविधा हेतु यह स्वस्थ सेवा केन्द्र शुरू किया गया है
शिक्षक एवं शिक्षक परिवार (सरकारी / गैर सरकारी) के लिए
एच.डी. परिवार (स्कूल) के विद्यार्थी, विद्यार्थी परिवार एवं कर्मचारियों के लिए
FREE O.P.D. Next 100 Days
4 जनवरी से शुभारम्भ
TIMING : SUMMER
Morning : 9:00 AM to 1:00 PM
Evening : 3:00 PM to 7:00 PM
TIMING : WINTER
Morning : 10:00 AM to 1:00 PM
Evening : 3:00 PM to 6:00 PM
DR. ASHMITA PHOGAT
M.B.B.S. (MIAAH), (HN-27538)
GENERAL PHYSICIAN
पता : शंकर कॉलोनी, तिकोना पार्क, चरखी दादरी Contact for more detail : 8003-99-8004 संरक्षक : बलराज फोगाट ढाणी फोगाट

खबर संक्षेप

गंगवा आज करेंगे मुख्य द्वार का उद्घाटन

बवानीखेड़ा। प्रदेश के जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी मंत्री रणबीर गंगवा चार जनवरी को कस्बा बवानी खेड़ा में गुरु दक्ष प्रजापति धर्मशाला के नवनिर्मित मुख्य द्वार का उद्घाटन करेंगे। जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी मंत्री गंगवा चार जनवरी को सुबह करीब 11 कस्बा में बस स्टैंड के समीप नवनिर्मित गुरु दक्ष प्रजापति धर्मशाला में पहुंचेंगे और और धर्मशाला के भव्य मुख्य द्वार का उद्घाटन करेंगे। बवानी खेड़ा के विधायक कपूर सिंह वाल्मीकि उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता करेंगे। वहीं दूसरी ओर नगर पालिका के अध्यक्ष सुंदर अत्री ने बताया कि कार्यक्रम को लेकर सभी तैयारियां पूरी कर ली गई हैं। मौके पर भंडारे का आयोजन भी किया जाएगा।

अवैध हथियार सप्लाई करने के दो आरोपी काबू

भिवानी। पुलिस स्पेशल स्टाफ ईश्वरवाल ने अवैध हथियार रखने व उपलब्ध कराने के मामले में दो आरोपियों को गिरफ्तार कर एक देशी पिस्तौल बरामद की है। स्पेशल स्टाफ ईश्वरवाल की टीम, मुख्य सिपाही प्रदीप कुमार के नेतृत्व में, अपराध पड़ताल ड्यूटी के दौरान मिरान चौक के पास मौजूद थी। एक युवक गांव बिडोला के खेतों की ओर से झूली माइनर की तरफ पैदल आ रहा है, जिसके पास बिना लाइसेंस का अवैध हथियार है। पुलिस ने माइनर पर युवक को काबू किया। उससे देशी पिस्तौल बरामद की गई। उसकी पहचान रविंद्र पुत्र सुमेर सिंह निवासी बिडोला, भिवानी के रूप में हुई। आरोपी रविंद्र ने खुलासा किया कि उक्त अवैध हथियार उसे उसके साथी सोमबीर निवासी बिडोला ने उपलब्ध कराया था। पुलिस ने आरोपी सोमबीर को गिरफ्तार कर लिया।

22 दिनों बाद 'खानक में खनन की खनक'

ग्रेप-3 खत्म होने के ऐलान के बाद खनन नगरी खानक में लौटी रौनक

मजदूर बोले, हम लोगों पर रोजी-रोटी का संकट बन गया था

हरिभूमि न्यूज ⏭ तोशाम

हल्की बूंदाबांदी के पश्चात एक्यूआई ओंधे मुंह गिरने से वातावरण का प्रदूषण घटा है। वातावरण में प्रदूषण घटने के बाद सरकार ने एनसीआर से ग्रेप-3 हटा लिया। ग्रेप हटने के आदेश मिलते ही करीब 22 दिनों से शांत हुई खनन नगरी खानक में खनन की खनक सुनाई दी, जिन क्रेशरों पर पत्थर पहुंचा गया।

उन क्रेशरों की मशीनों ने पत्थर पीसना आरंभ कर दिया। हालांकि खानक में शनिवार को एकबारगी खनन के बाद कुछ गाड़ियों को बाहर निकाला गया, लेकिन पोर्टल के जवाब देने के बाद गाड़ियां खानों के बीच ही खड़ी रही। जिस वजह से खनन नगरी में गिनती के ही क्रेशरों पर पत्थर पिसाई का कार्य चला।

उल्लेखनीय है कि शुक्रवार देर शाम सरकार द्वारा एनसीआर से ग्रेप-3 हटाने के निर्देश के बाद रात को ही क्रेशर संचालकों ने अपनी तैयारी शुरू कर ली थी। सुबह सवेरे अधिकांश क्रेशर संचालक मशीनों के पास पहुंच गए और पत्थर मिलते ही कार्य शुरू कर दिया। बताया जा रहा है कि शनिवार सुबह कुछ ही गाड़ियों में पत्थर भरकर क्रेशर तक पहुंचाया गया। उसके बाद चलने की वजह से गाडियों की रवानगी नहीं हो पाई। जिससे गाड़ियां काफी देर तक खानों में ही खड़ी रही।

तोशाम। पत्थरों को तोड़कर रोड़ी तैयार करती मशीन। फोटो : हरिभूमि

दस हजार लोगों को मिलेगा रोजगार...

करीब 22 दिनों से खानक व आसपास के इलाकों में खनन का कार्य बंद था। जिस वजह से इन इलाकों में एक भी क्रेशर नहीं चलाया जा रहा था। खनन तथा क्रेशर न चलने से इलाके में करीब 10 हजार से ज्यादा लोग इससे प्रभावित थे। क्योंकि गाड़ी चालक, मजदूर इन क्रेशरों पर कार्य करके अपने परिवार का पालन व पोषण करते है, लेकिन पिछले 22 दिनों से गाड़ी चालकों व मजदूरों के पास कोई कार्य नहीं था। सभी मजदूर तथा गाड़ी चालक खाली ही बैठे थे। शनिवार को जिस तरह से खानों में खनन की जानकारी मिली तो मजदूरों तथा गाड़ी चालकों के चेहरों पर रौनक लौट आई। गाड़ी चालकों तथा मजदूरों का कहना था कि वे कई दिनों से खानक में कार्य नहीं हो पा रहा था जिससे उनके समक्ष रोजी-रोटी का संकट बन गया था वहीं गाड़ी चालकों के लिए गाड़ी की किस्त भरना मुश्किल हो गया था। अब फिर से खानों में खनन का कार्य शुरू हो गया है। अब वे अपने परिवार का पालन-पोषण सही ढंग से कर पाएंगे। उक्त इलाके में करीब दस से 12 हजार के आसपास मजदूर कार्य करते है। खानों में कार्य शुरू होने के बाद प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से उक्त लोगों की आजीविका चल जाएगी।

बढ़ते हुए दामों पर भी लगेगी लगाम...

तोशाम। पत्थरों को पीस कर क्रेशर तैयार करती मशीन।

करीबन तीन सप्ताह तक निरंतर खनन कार्य बंद होने की वजह से क्रेशर, रोड़ी के भाव आसमान पर पहुंच गए थे।लोगों को मकान व अन्य निर्माण करने बड़े मुश्किल हो रहे थे। अब फिर से खनन का कार्य शुरू हो गया है। बढ़े हुए दाम फिर से वापस हो जाएंगे। क्योंकि अभी तक खानक में क्रेशर बंद थे। जिस वजह से रोजाना क्रेशर व रोड़ी के भाव बढ रहे थे। खनन का कार्य शुरू होने के बाद लोगों को इन बढ़े हुए भावों से राहत मिलेगी।

क्या कहते हैं अधिकारी

इस संबंध में एचएसआईआईडीसी के प्रोजेक्ट मैनेजर संजय मित्तल ने कहा कि हमारे पास जैसे ही खनन शुरू करने के आदेश आए हमने बिना कोई देरी किए खनन कार्य को शनिवार सुबह सुचारू रूप से शुरू करवा दिया। खनन शुरू होने से एक बार फिर खनन नगरी में रौनक लौटी है हम भी चाहते हैं कि खनन सुचारू रूप से चले और खनन से जुड़े लोगों को रोजगार निरंतर मिलता रहे।

दोपहर तक इंतजार करते रहे चालक...

पोर्टल में तकनीकी खामी की वजह से खनन से जुड़े गाड़ी चालक काफी देर तक इंतजार करते रहे और शाम के वक्त पोर्टल चला तो कुछ ओर गाड़िया निकली। जिसके चलते शनिवार को कुछेक क्रेशरों पर ही पत्थर पिसाई का कार्य शुरू हो पाया।

बवानीखेड़ा। बीके वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, बवानी खेड़ा में चल रहे राष्ट्रीय सेवा योजना के साप्ताहिक शिविर के तीसरे दिन एनएसएस प्रभारी अमित कुमार सहित राष्ट्रीय स्वयं सेवक योगाभ्यास करते हुए। फोटो : हरिभूमि

राष्ट्रीय सेवा योजना के साप्ताहिक शिविर में बताई योग की क्रियाएं

हरिभूमि न्यूज ⏭ बवानीखेड़ा

बीके वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, बवानी खेड़ा में चल रहे राष्ट्रीय सेवा योजना के साप्ताहिक शिविर के तीसरे दिन एन.एस.एस. प्रभारी अमित कुमार सहित राष्ट्रीय स्वयं सेवकों ने योगाभ्यास किया। आचार्या प्रोमिला वर्मा की देखरेख में स्वयं सेवकों ने योगिक क्रियाएं, प्राणायाम एवं ध्यान का अभ्यास किया। सर्वप्रथम उन्होंने राष्ट्रीय स्वयंसेवकों को वार्म-अप करने के लिए योगिंग-जोगिंग का अभ्यास करवाया। बैठकर किए जाने वाले आसनों में शुगर को नियंत्रित करने के लिए मंडूकासन, दंडासन, शशांक आसन, गोमुखासन, वज्रासन, वक्रासन का अभ्यास करवाया गया। प्राणायाम अनुलोम-विलोम, बाह्य प्राणायाम, कपालभाति क्रिया, उज्जयी प्राणायाम तथा प्रणव प्राणायाम के पश्चात ध्यान का भी अभ्यास करवाया गया।

यह रहे मौजूद

प्राचार्य पंकज कुमार मिश्रा ने अपने उद्बोधन में स्वयंसेवकों को एन.एस.एस. का मुख्य उद्देश्य उनमें मानव मूल्य गढ़ना बताया। इस प्रकार की गतिविधियां विद्यार्थियों का मार्ग प्रशस्त कर उनको आदर्श मानव के रूप में प्रतिष्ठित करती हैं। इस अवसर पर वरिष्ठ विभाग संचालक योगेंद्र सिंह, अनुशासन प्रभारी मनीष शंकर, प्रमोद बंसल, कश्मीर भाटी, सुधांशु आदि उपस्थित रहें।

विधायक सांगवान ने दरबार में सुनीं जनसमस्याएं

चरखी दादरी। विधायक सुनील सांगवान ने शनिवार को अपने कैंप कार्यालय में जनता दरबार लगाया। इस दौरान लोग अपनी समस्याएं लेकर पहुंचे।

चरखी दादरी। लोगों की समस्या सुनते विधायक सुनील सांगवान

विधायक सांगवान ने समस्याओं के समाधान के लिए संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिए। विधायक सुनील सांगवान ने कैंप कार्यालय पहुंचे लोगों को नववर्ष की बधाई दी। विधायक सांगवान ने कहा कि जनता दरबार उनके लिए केवल औपचारिक कार्यक्रम नहीं, बल्कि जनता के सुख-दुःख को सीधे सुनने एवं समझने का सशक्त माध्यम है। इसी भावना के साथ वे निरंतर जनता के बीच खड़े रहकर उनकी समस्याओं के समाधान के लिए प्रतिबद्ध हैं। विधायक ने लोगों को योजनाओं की जानकारी दी।

पेड़ कटाई के मामले ने पकड़ा तूल

जांच करवाने के लिए जिला वन अधिकारी को पत्र भेजा

हरिभूमि न्यूज ⏭ बहल

गोकलपुरा गांव के मकड़ाना जोहड़ में बन रहे पोषक अनाज अनुसंधान केन्द्र में हरे पेड़ों की कटाई किए जाने का मामला तूल पकड़ता जा रहा है। ग्रामीणों ने मामले की रेंज अधिकारी लोहारू द्वारा की गई जांच पर सवाल उठाते हुए इसकी फिर से जांच करवाने के लिए जिला वन अधिकारी को पत्र भेजा है। समाजसेवी व पर्यावरण प्रहरी महावीर चहल ने बताया कि करीब अढाई महीने पहले केन्द्र में निर्माण किए जाने की आड़ में बिना पूर्व अनुमति के सैंकड़ों पेड़ों की बलि दे दी थी। इस पर गोकलपुरा गांव के ग्रामीणों ने आवाज उठाई तो वन विभाग ने मामले की जांच रेंज अधिकारी लोहारू को सौंपी थी। महावीर चहल ने बताया कि रेंज अधिकारी ने केन्द्र के अधिकारियों से सांठगाठ करके जिस जेसीबी से पेड़ उखाड़े गए थे उस पर नाममात्र 8960 रुपये जुर्माना लगाकर मामले की इतिश्री कर दी थी।

ग्रामीण संतुष्ट नहीं

पर, रेंज अधिकारी द्वारा की गई जांच से ग्रामीण संतुष्ट नहीं हुए और मामले की जांच के लिए विचार विमर्श किया। ग्रामीणों ने बताया कि वे मामले की जांच के लिए हरसंभव प्रयास करेंगे और जरूरी हुआ तो आंदोलन भी करेंगे। उन्होंने बताया कि जिला वन अधिकारी राजेश वत्स को मांग पत्र सौंपा है और उसमें इस मामले की पूरी जांच किए जाने और पर्यावरण को नुकसान पहुंचाने वाले अधिकारियों, कर्मचारियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई किए जाने की मांग रखी है।

राजकीय मॉडल संस्कृति स्कूल में चलाया स्वच्छता अभियान

भिवानी। राजकीय मॉडल संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में चल रहे एनएसएस शिविर के तीसरे दिन स्वयंसेवकों ने स्वच्छता का संकल्प लिया। मुख्य अतिथि हरदीप सिंह बागोटिया ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि स्वस्थ जीवन के लिए कूड़ा प्रबंधन और गीले-सूखे कचरे को अलग करना अनिवार्य है।

प्राचार्या सविता घणघस ने कहा कि एनएसएस शिविर विद्यार्थियों में सेवा भाव और सामाजिक जिम्मेदारी की नींव रखते हैं। कार्यक्रम अधिकारी आनंद कुमार ने स्वच्छता को जीवन का अभिन्न अंग बताया। इस दौरान विद्यार्थियों ने सफाई अभियान चलाया और जोगिंदर काला से पेंटिंग की बारीकियां सीखीं। मौके पर संजय कुमार, राजेश कुमार, विष्णु कुमार सरोहा और विनोद कुमार सहित समस्त स्टाफ मौजूद रहा।

ओटीपी नंबर अनजान के साथ सांझा न करें

भिवानी। गांव बजीण स्थित वीर शहीद शीशपाल पीएमश्री राजकीय वमा विद्यालय में जारी सात दिवसीय विशेष राष्ट्रीय सेवा योजना कैंप शनिवार को तीसरे दिन उत्साह और ऊर्जा के साथ शुरू हुआ। दिन की शुरुआत विद्यार्थियों के योगाभ्यास, पीटी और हल्के व्यायाम से हुई। प्राचार्य अनुप सिंह पुनिया के मार्गदर्शन व एनएसएस कार्यक्रम अधिकारी सुमेर सिंह की देखरेख में जारी शिविर में स्वयंसेवकों ने न केवल शारीरिक व्यायाम किया, बल्कि अनुशासन एवं स्वस्थ जीवनशैली का पाठ भी सीखा। शिविर में सर्व हरियाणा ग्रामीण बैंक के मैनेजर प्रवीण कुमार और बैंककर्मी बजरंगलाल विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित रहे।

हरियाणा ग्रामीण बैंक के अधिकारियों ने दी डिजिटल पेमेंट की जानकारी

भिवानी। डिजिटल पेमेंट के बारे में स्वयंसेवकों को जानकारी देते बैंक अधिकारी।

विद्यालय के प्राचार्य अनूप सिंह पूनिया ने माल्यार्पण कर अतिथियों का गर्मजोशी से स्वागत किया। मंच संचालन एनएसएस कार्यक्रम अधिकारी सुमेर सिंह ने किया। एनएसएस स्वयंसेवकों ने अतिथियों के सम्मान में शानदार सांस्कृतिक प्रस्तुतियां दीं। स्वयंसेवकों ने स्वागत गीत व एनएसएस गीत गाया, जिससे पूरे वातावरण को देशभक्ति और सेवाभावना से भर दिया। कार्यक्रम में बैंक अधिकारियों ने स्वयंसेवकों के साथ डिजिटल पेमेंट के विषय में महत्वपूर्ण जानकारी सांझा की। उन्होंने वर्तमान समय में ऑनलाइन लेनदेन की बढ़ती उपयोगिता व उससे जुड़ी सावधानियों पर चर्चा की। अतिथियों ने साइबर अपराध से बचने के लिए अपना ओटीपी नंबर किसी अनजान व्यक्ति के साथ सांझा न करने, बैंक, एटीएम और क्रेडिट कार्ड का सुरक्षित उपयोग करने की जानकारी दी। इस अवसर पर प्रवक्ता अजय कुमार, रामअवतार, प्रिंस, राजेश, विनोद क्लर्क, बलवान चौकीदार, राजेश व अनूप सहित विद्यालय का स्टाफ और 50 स्वयंसेवक मुख्य रूप से उपस्थित रहे।

ड्रग फ्री हरियाणा अभियान के तहत जिले भर में होंगे जागरूकता कार्यक्रम

भिवानी। समाज को नशामुक्त बनाने और युवाओं को नशे की गिरफ्त से बचाने के उद्देश्य से जिला विधिक सेवा प्राधिकरण भिवानी द्वारा "ड्रग फ्री हरियाणा" विषय पर जिले भर में व्यापक जागरूकता अभियान चलाया जा रहा है। यह अभियान जिला एवं सत्र न्यायाधीश तथा जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, भिवानी के चेयरमैन डीआर. चालिया के मार्गदर्शन में तथा मुख्य न्यायिक दंडाधिकारी (सीजेएम) एवं जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के सचिव पवन कुमार की अध्यक्षता में संचालित किया जा रहा है। इस जागरूकता कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य समाज में बढ़ती नशे की प्रवृत्ति के प्रति आमजन को सचेत करना तथा विशेष रूप से युवा वर्ग को नशे से दूर रखने के लिए ठोस और प्रभावी प्रयास करना है। कार्यक्रम के अंतर्गत विभिन्न शिक्षण संस्थानों, ग्रामीण क्षेत्रों, शहरी इलाकों और सार्वजनिक स्थलों पर जागरूकता गतिविधियाँ आयोजित की जा रही हैं। सीजेएम एवं जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के सचिव पवन कुमार ने कहा कि नशीली दवाओं का बढ़ता प्रचलन आज समाज के लिए एक गंभीर सामाजिक चुनौती बन चुका है।

■ जिला विधिक सेवा प्राधिकरण भिवानी की पहल

नशे से स्वयं को दूर रखें युवा

उन्होंने कहा कि नशे की लत के कारण युवा वर्ग अपने लक्ष्य से भटक रहा है, जिससे सामाजिक असंतुलन उत्पन्न हो रहा है और अपराधों में भी वृद्धि देखी जा रही है। उन्होंने युवाओं से आह्वान किया कि वे नशे जैसी बुरी आदतों से स्वयं को दूर रखें और अपने समय व ऊर्जा का सही दिशा में उपयोग करें। उन्होंने कहा कि स्वस्थ युवा ही सशक्त समाज और मजबूत राष्ट्र की नींव होते हैं। यदि आज का युवा नशे की गिरफ्त में चला गया, तो इसका सीधा असर देश के भविष्य पर पड़ेगा।

आसार मौसम का बदलता रहा मिजाज, धुंध व बादलवाई से बढ़ी परेशानी

सूर्यदेव बादलों की ओट में आंख मिचौली का खेल खेलते नजर आए, पारा भी लगातार जमाव बिंदू की तरफ जा रहा

हरिभूमि न्यूज ⏭ भिवानी

तीसरे दिन भी पल पल मौसम का मिजाज बदलता रहा। कभी आसमान में धुंध की चादर तो कभी बादलों के जमघट ने पारे का गुरुर को तोड़ा। इस दौरान चटक धूप कम ही दिखी। सूर्यदेव बादलों की ओट में आंख मिचौली का खेल खेलते नजर आए। धूप न खिलने से ठंड के मारे लोगों की कंपकपी छूटती रही। शनिवार शाम के वक्त एकबारगी सूर्यदेव के दर्शन हुए थे,लेकिन कुछ पलों बाद फिर से धुंध की चादर में पूरा शहर व देहात लिपट गया। लोगों ने ठंड से बचने के लिए अलाव का सहारा लिया। कड़ाके की ठंड की वजह से शहर की सड़कें सूनी सूनी नजर आई। सोमवार को भिवानी का अधिकत्तम तापमान 16 डिग्री और न्यूनत्तम 7 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया।

भिवानी। धुंध को चिरकर गंतव्य की ओर जाता वाहन चालक। फोटो : हरिभूमि

वाहन सड़कों पर रेंग-रेंग कर चलते रहे

शनिवार सुबह जब लोग सोकर उठे तो उस वक्त चहुंओर धुंध की चादर तनी हुई थी। लोगों को लगा कि जल्द ही धुंध की चादर छंटने वाली है,लेकिन दस बजे तक धुंध की गहनता के चलते वाहन सड़कों पर रेंग रेंग कर चलते रहे। उसके बाद धीमी गति से हवा चली तो धुंध की चादर कुछ ही मिनटों में फट गई। उसके बाद आसमान में काली घटाए छा गई। लोगों को लगा कि अब बारिश होगी,लेकिन बिना बरसे ही बादल धुंध के बादलों में छीप गए। दोपहर तक इसी तरह का मौसम बना रहा। उसके बाद फिर से हवा चली तो लोगों को लगा कि अब सूर्यदेव के दर्शन होंगे। पर हवा के बाद बादलों की गहनता बन गई। इस तरह का मौसम शाम तक रहा। आसमान में बादल छाने व धुंध की गहनता की वजह से पारा भी लगातार जमाव बिंदू की तरफ झुकता नजर आया। ठंड की वजह से लोग अपने घरों में छीपे रहे। ठंड से बचने के लिए अलाव का सहारा लेते नजर आए। शहर में जिस तरफ नजर दौडाई जाए। उसी दिशा में अलाव के आगे लोग बैठे दिखे। देर शाम तक इसी तरह का माहौल बना रहा।

फसलों में होगा फायदा बढ़ेगी औसतन पैदावार

जिस तरह का मौसम चल रहा है। इस तरह के मौसम से लोगों के लिए तो परेशानी बढ जाएगी,लेकिन फसलों के लिए बेहतरीन माना जा रहा है। क्योंकि इस वक्त धुंध के साथ हलकी फुव्वार फसलों पर गिर रही है। जिससे फसलों की हलकी सिंचाई हो जाती है। फिलहाल रबी फसलों को इतने ही पानी की जरूरत थी। वह विगत में हलकी बूंदाबांदी तथा धुंध के साथ हलकी फुव्वारों से पूरी हो रही है।

इस साल लार्ज-कैप पर फोकस करें व सेक्टर चयन में बरतें समझदारी

▶▶ स्मार्ट निवेशकों को 2026 के लिए निवेश के टिप हाई वैल्यूएशन और वैश्विक अनिश्चितता के माहौल में लार्ज कैप सबसे बेस्ट

▶▶ 60% लार्ज-कैप, 15% मिड-कैप और 10% स्मॉल-कैप में रखना सही रहेगा, इसमें अच्छा रिटर्न देने की क्षमता
▶▶ बैंकिंग, फाइनेंशियल्स, इंफ्रास्ट्रक्चर, कंज्यूमर डिस्क्रेशनरी, हेल्थकेयर और आईटी प्रमुख ग्रोथ सेक्टर रहेंगे

निवेश मंत्रा
बिजनेस डेस्क

निवेश के नजरिये से देखा जाए तो वर्ष 2025 बेहद उतार-चढ़ाव वाला साल रहा। मिडकैप और स्मॉलकैप फंड्स ने जहां निवेशकों को निराश किया, वहीं लार्ज कैप फंड्स ने फायदा पहुंचाया है। अब बाजार के जानकारों का कहना है कि वर्ष 2026 के लिए निवेशकों निवेश के लिए धैर्य के साथ बेहतर रणनीति बनानी होगी, ताकि उनकी ग्रोथ बरकरार रह सके। अब 2026 में महंगाई के नियंत्रण में रहने, ब्याज दरों में संभावित कटौती और भू-राजनीतिक जोखिमों के धीरे-धीरे कम होने से बाजार के माहौल में सुधार की उम्मीद है। जानकारों ने 2026 में लार्ज-कैप शेयरों पर फोकस करने की सलाह है। हाई वैल्यूएशन और वैश्विक अनिश्चितता के माहौल में लार्ज कैप कंपनियां ज्यादा स्थिरता, बेहतर बैलेंस शीट और मजबूत अर्निंग हासिल करती हैं। रिपोर्ट के अनुसार, पोर्टफोलियो का लगभग 60% लार्ज-कैप, 15% मिड-कैप और 10% स्मॉल-कैप में रखना सही रहेगा. मिड और स्मॉल-कैप में अवसर हैं, लेकिन केवल चुनिंदा और मजबूत कंपनियों में ही निवेश करना चाहिए। बैंकिंग, फाइनेंशियल्स, इंफ्रास्ट्रक्चर, कंज्यूमर डिस्क्रेशनरी, हेल्थकेयर और आईटी प्रमुख ग्रोथ के सेक्टर रहेंगे। ऐसे में इन सेक्टरों पर निवेश के लिए फोकस किया जा सकता है।

यह वर्ष सावधानी के साथ अवसर वाला

नए साल की शुरुआत भारतीय शेयर बाजार के लिए ज्यादा बैलेंस और उम्मीदों से भरी दिख रही है। 2025 में ग्लोबल टेंशन, हाई वैल्यूएशन और विदेशी निवेशकों की बिकवाली के बावजूद भारतीय बाजार घरेलू निवेशकों की मजबूत भागीदारी से टिका रहा। यह साल "सावधानी के साथ अवसर" वाला माना जा सकता है। एक ब्रोकरेज हाउस ने 2026 की इन्वेस्टमेंट स्ट्रैटेजी पर अपनी एक रिपोर्ट दी है। इसमें कहा गया है कि निवेशकों को लार्ज कैप फंड्स पर फोकस करना चाहिए, चूंकि लार्ज कैप कंपनियां ज्यादा स्थिरता प्रदान करती हैं।

निवेश के लिए यह दी सलाह

ब्रोकरेज हाउस ने गोल्ड और सिल्वर में एलोकेशन घटाकर 5 फीसदी और डेट कैटेगरी (बॉन्ड/फिक्स्ड इनकम) में 10 फीसदी करने की सलाह दी है, ताकि स्थिरता और जोखिम संतुलन बना रहे। जैसे-जैसे वैश्विक जोखिम कम होंगे, इक्विटी की ओर झुकाव बढ़ेगा। निवेशक 60% लार्ज-कैप, 15% मिड-कैप और 10% स्मॉल-कैप में रखें। इसके अलावा गोल्ड, सिल्वर में 5% और डेट कैटेगरी में 10% निवेश की सलाह दी जाती है। इससे आपका पोर्टफोलियो बैलेंस रहेगा और निवेश में मुनाफा होगा, नुकसान नहीं।

इन सेक्टर पर करें फोकस

सेक्टर लेवल पर, बैंकिंग और फाइनेंशियल्स, इंफ्रास्ट्रक्चर, कंज्यूमर डिस्क्रेशनरी, हेल्थकेयर और आईटी 2026 के प्रमुख ग्रोथ सेक्टर माने गए हैं। ब्याज दरों में कटौती से बैंकों को क्रेडिट ग्रोथ का फायदा मिलेगा, जबकि सरकारी कैपेक्स और निजी निवेश में सुधार से इंफ्रास्ट्रक्चर कंपनियों को सपोर्ट मिलेगा। टैक्स राहत, कम महंगाई और 8वें वेतन आयोग जैसी उम्मीदों से उपभोक्ता खर्च बढ़ने की संभावना है।

टिकाऊ ग्रोथ वाला साल

कुल मिलाकर, 2026 को "धीरे लेकिन टिकाऊ ग्रोथ" का साल माना जा रहा है। निफ्टी-50 के लिए दिसंबर 2026 तक लगभग 29,150 का लक्ष्य रखा गया है, जो करीब 12% सालाना रिटर्न का संकेत देता है। हालांकि हाई वैल्यूएशन, विदेशी निवेशकों की वापसी में देरी और वैश्विक घटनाक्रम जोखिम बने रहेंगे। इसलिए 2026 की सबसे अच्छी निवेश रणनीति होगी-लार्ज-कैप पर फोकस, सेक्टर चयन में समझदारी, और डाइवर्सिफाइड पोर्टफोलियो के साथ धैर्य।

क्या हैं लार्जकैप फंड्स

लार्ज-कैप फंड्स उन कंपनियों में निवेश करते हैं, जिनकी मार्केट कैपिटलाइजेशन 20,000 करोड़ रुपये से अधिक होती है। ये फंड्स स्थिरता और कम जोखिम के लिए जाने जाते हैं, जो उन्हें लंबी अवधि के निवेशकों के लिए उपयुक्त बनाते हैं।

टॉप लार्ज-कैप म्यूचुअल फंड्स

- निप्पॉन इंडिया लार्ज कैप फंड : 5-वर्षीय रिटर्न 27% और 10-वर्षीय रिटर्न 16%
- आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल लार्ज कैप फंड : 5-वर्षीय रिटर्न 23% और 10-वर्षीय रिटर्न 16%
- एचडीएफसी लार्ज कैप फंड : 5-वर्षीय रिटर्न 23% और 10-वर्षीय रिटर्न 14%
- इन्वेस्को इंडिया लार्जकैप फंड : 5-वर्षीय रिटर्न 22% और 10-वर्षीय रिटर्न 15%
- टाटा लार्ज कैप फंड : 5-वर्षीय रिटर्न 21% और 10-वर्षीय रिटर्न 14%

लार्ज-कैप फंड्स के फायदे

- स्थिरता और कम जोखिम
- लंबी अवधि के निवेश के लिए उपयुक्त
- अनुभवी फंड मैनेजर्स द्वारा प्रबंधित
- विविध पोर्टफोलियो

बिना बिल घर में रख सकते हैं कितना सोना, समझ लें नियम

जानकारी
बिजनेस डेस्क

■ शादी, विरासत और गिफ्ट में मिले गोल्ड पर ऐसे है टैक्स के नियम
■ अगर सोने के गहने या आभूषण वैध आय से प्राप्त किए गए हैं और करदाता उसका स्रोत बताए

भारत में शादी ब्याह का सीजन चल रहा है। इसका मतलब है कई पारिवारिक कार्यक्रम और साथ ही घरों में लॉकर से सोना निकालकर दुल्हन के गहनों में शामिल किया जाना। आम धारणा के उलट, भारत में किसी व्यक्ति या परिवार के पास सोने की मात्रा पर कोई कानूनी सीमा नहीं है। शर्त सिर्फ यह है कि सोना खरीदने या पाने का स्रोत बताया जा सके। ज्यादातर लोग जिन सीमाओं का जिक्र करते हैं, वे सीबीडीटी (सीबीडीटी) की नॉन-सीजर गाइडलाइंस से जुड़ी हैं। ये गाइडलाइंस आयकर विभाग की तलाशी और जब्ती की कार्रवाई के दौरान लागू होते हैं। ये सोना रखने की सीमा नहीं हैं, बल्कि वह मात्रा है, जिनके भीतर होने पर, दस्तावेज न होने की स्थिति में भी आमतौर पर गहने जब्त नहीं किए जाते।

ये बातें नजरअंदाज न करें

ये लचीले नियम सिर्फ व्यक्तिगत और घरेलू इस्तेमाल के गहनों पर लागू होते हैं, न कि इन मामलों में निवेश के तौर पर जमा किया गया सोना, बड़ी मात्रा में रखे गए बुलियन, सिक्के या सोने की ईंटें, बिना वित्तीय स्रोत बताए ट्रेडिंग या सट्टे के लिए जमा किया गया सोना अगर सोने की मात्रा तय सीमा से ज्यादा है और उसका स्रोत नहीं बताया जा सकता, तो अतिरिक्त सोना अघोषित निवेश माना जा सकता है। ऐसे में भारी टैक्स और जुर्माना लगाया जा सकता है।

फाइनेंशियल एक्सपर्ट के अनुसार आज के समय में इसका मतलब रुपये के लिहाज से क्या होता है। एक सामान्य परिवार, जिसमें पति, पत्नी और एक अविवाहित बेटी शामिल हों, उसके लिए कानूनी रूप से स्वीकार्य सोने की मात्रा इस प्रकार है। पत्नी 500 ग्राम, पति 100 ग्राम, बेटी 250 ग्राम। इस तरह कुल सोना 850 ग्राम होता है।

कितना सोना रखना कानूनी रूप से सही

अगर सोने के गहने या आभूषण वैध आय से प्राप्त किए गए हैं और करदाता उसका स्रोत समझा सकता है, तो उन्हें रखने पर कोई पाबंदी नहीं है। इसमें विरासत में मिला सोना भी शामिल है। हालांकि, एक तय मात्रा तक सोना रखने के लिए स्रोत बताने की जरूरत नहीं होती।" विवाहित महिला 500 ग्राम तक सोने के गहने रख सकती है, अविवाहित महिला 250 ग्राम तक सोने के गहने रख सकती है। वहीं, पुरुष 100 ग्राम तक सोने के गहने रख सकते हैं। हिंदू अविभाजित परिवार सोने की मात्रा का आकलन परिवार की आय और सामाजिक स्थिति के आधार पर किया जाता है, इसके लिए कोई तय सीमा नहीं है। ये सीमाएं भारतीय सामाजिक परंपराओं- जैसे शादी, विरासत और पारिवारिक उपहार- को ध्यान में रखकर तय की गई हैं और इन्हें घरों में रखे जाने वाले सोने की उचित मात्रा माना जाता है। ये तय सीमाएं केवल उसी व्यक्ति के परिवार के सदस्यों पर लागू होती हैं, जिसके खिलाफ आयकर विभाग की तलाशी (टैक्स सर्च) की कार्रवाई की जाती है। यदि तलाशी के दौरान परिवार के सदस्यों के अलावा किसी और के आभूषण पाए जाते हैं, तो उन्हें कर अधिकारियों द्वारा जब्त किया जा सकता है।

यह स्पष्टता क्यों जरूरी

यह अंतर परिवारों के लिए बेहद अहम है, क्योंकि इससे टैक्स सर्च के दौरान बेवजह की घबराहट से बचाव होता है। भारतीय संस्कृति और परंपरा में गहनों के महत्व को मान्यता मिलती है। वैध घरेलू संपत्ति और अघोषित आय के बीच साफ फर्क किया जा सकता है। गलत जानकारी के कारण होने वाली महंगी कानूनी या अनुपालन संबंधी गलतियों से बचाव होता है। अधिकांश गलतियां दो छोरों पर होती हैं या तो लोग मान लेते हैं कि बिना बिल का कोई भी सोना अवैध है, या फिर बड़ी मात्रा में रखे गए, बिना स्रोत बताए गए सोने के लिए जरूरी दस्तावेजों को पूरी तरह नजरअंदाज कर देते हैं। यदि कोई व्यक्ति वर्षों में घोषित आय से खरीदे गए सोने का स्रोत साबित कर सकता है, तो वह कितनी भी मात्रा में सोना रख सकता है। इसी तरह, उपहार या विरासत में मिले सोने के मामले में भी संबंधित बिल, वसीयत, डीड या अन्य दस्तावेज होने चाहिए।

चांदी में 2026 में भी बड़ी संभानाएं लेकिन संभलकर करना होगा निवेश

●बिना रणनीति और जोखिम प्रबंधन के निवेश हो सकता है रिस्की ●अगले 1-2 साल में 90–100 डॉलर प्रति औंस की ओर बढ़त संभव●एमसीएक्स पर डेढ़ माह में चांदी करीब 50% तक उछली

सुझाव
बिजनेस डेस्क

पिछले डेढ़ महीने में चांदी ने जो रफ्तार दिखाई है, उसने निवेशकों को चौंका दिया है। इस दौरान एमसीएक्स पर चांदी करीब 50% तक उछल चुकी है और अब सवाल यही है कि क्या यह सिर्फ एक तेज रैली है या इसके पीछे कोई गहरी वजह छिपी है? हकीकत यह है कि यह उछाल अफवाहों या सट्टेबाजी का नतीजा नहीं, बल्कि वैश्विक स्तर पर चांदी की भूमिका में आए बड़े बदलाव का संकेत है। फिलहाल इस सुपर रैली के बाद निवेशकों को चांदी में क्या करना चाहिए। जानकारों का कहना है कि चांदी 2026 में भी निवेशकों की चांदी करवाएगी, लेकिन इसके लिए लोगों को संभलकर निवेश करना होगा और रणनीति बनानी होगी, ताकि बाद में पछताना न पड़े। सर्राफा बाजार के जानकारों का कहना है कि चांदी की भूमिका वैश्विक स्तर पर बढ़ी है। अगर इंडस्ट्रियल डिमांड और सप्लाई की बनी रहती है, तो अगले 1-2 साल में 90–100 डॉलर प्रति औंस की ओर बढ़त संभव है। यह निवेशकों को मालामाल कर सकती है।

चांदी की भूमिका में बड़ा बदलाव

जानकारों का कहना है कि कई सालों तक चांदी को या तो गहनों के लिस मेटल माना गया या फिर ट्रेडिंग के लिए इस्तेमाल होने वाला मेटल, लेकिन अब यह सोच बदल चुकी है। आज चांदी रणनीतिक इंडस्ट्रियल मेटल बन चुकी है। रिन्यूएबल एनर्जी, इलेक्ट्रिफिकेशन, डिजिटल इकॉनमी और रक्षा क्षेत्र में बढ़ती जरूरतों ने चांदी को उत्पादन के लिए अनिवार्य बना दिया है। यही वजह है कि इसकी मांग अब अस्थायी नहीं, बल्कि स्थायी बनती जा रही है।

इंडस्ट्रियल डिमांड क्यों है मजबूत

चांदी की सबसे बड़ी ताकत है इसकी बेहतरीन इलेक्ट्रिकल कंडक्टिविटी, जो इसे सोलर पैनल, इलेक्ट्रॉनिक्स, सेमीकंडक्टर्स, पावर ग्रिड और डिफेंस सिस्टम्स में बेहद जरूरी बनाती है। इन क्षेत्रों में कीमत से ज्यादा भरोसे और प्रदर्शन को अहमियत दी जाती है। इसका मतलब यह है कि दाम बढ़ने के बावजूद कंपनियां चांदी खरीदना बंद नहीं कर सकतीं। इसी वजह से चांदी की मांग अब प्राइस इनेलास्टिक हो गई है और गिरावट पर तुरंत सपोर्ट देखने को मिलता है।

ये रैली, पिछली रैलियों से क्यों अलग

लंबे समय तक चांदी की कीमतें फ्यूचर्स और पेपर ट्रेडिंग से तय होती रहीं, लेकिन जैसे ही ग्लोबल स्तर पर दाम संवेदनशील स्तरों तक पहुंचे, फिजिकल उपलब्धता का सवाल खड़ा हो गया। सप्लाई टाइट हुई, सेलर्स पीछे हटे और खरीदार मजबूर होकर ऊंचे दाम पर खरीदने लगे. नतीजा तेज सिंगल-डे मूव्स और लगातार ऊंची क्लोजिंग, जो यह दिखाते हैं कि बाजार अब राय नहीं, बल्कि हकीकत के आधार पर कीमत तय कर रहा है। आगे चलकर चांदी में संभावनाएं बनी हुई हैं। अगर इंडस्ट्रियल डिमांड और सप्लाई की कमी बनी रहती है, तो अगले 1-2 साल में 90-100 डॉलर प्रति औंस की ओर बढ़त संभव है, लेकिन इतिहास यह भी बताता है कि चांदी बेहद अस्थिर (वोलेटाइल) कमोडिटी है। 1980 और 2011 की तरह तेज रैली के बाद गहरी गिरावट भी आ सकती है। लंबे समय में 40 डॉलर प्रति औंस एक अहम सपोर्ट जोन माना जाता है। इसलिए चांदी में निवेश मौका जरूर है, लेकिन बिना रणनीति और जोखिम प्रबंधन के निवेश रिस्की हो सकता है।

चांदी में निवेश के विकल्प

- **फिजिकल चांदी :** आप बाजार से चांदी के सिक्के, गहने या बार खरीद सकते हैं। इसमें चोरी या शुद्धता की चिंता रहती है, इसलिए बीआईएस हॉलमार्क्ड चांदी ही खरीदना चाहिए।
- **सिल्वर ईटीएफ :** ये एक ऐसा फंड है जो चांदी की कीमतों पर आधारित है। इसमें पैसा चांदी की कीमत के हिसाब से बढ़ता-घटता है। ये स्टॉक एक्सचेंज पर शेयरों की तरह ट्रेड होते हैं।
- **म्यूचुअल फंड्स :** चांदी से जुड़े म्यूचुअल फंड्स भी अच्छे विकल्प हैं। कमोडिटी फंड, खनन कंपनियों के शेयर और एमसीएक्स फ्यूचर्स-ऑप्शन्स भी विकल्प हैं।
- सोवरिन गोल्ड बॉन्ड (एसजीबी) की तरह सिल्वर बॉन्ड : सरकार द्वारा जारी किए जाते हैं, जो चांदी की कीमतों से जुड़े होते हैं।
- **चांदी के शेयर :** चांदी की खनन करने वाली कंपनियों के शेयरों में निवेश कर सकते हैं, जैसे कि फर्स्ट मैजेस्टिक सिल्वर कॉर्प, पैन अमेरिकन सिल्वर कॉर्प और एंडेवर सिल्वर कॉर्प।

अलर्ट हर व्यक्ति कमाई को सही तरीके से निवेश कर बन सकता है मजबूत

बचत करने के लिए स्पष्ट योजना बनाएं और भविष्य को सुरक्षित करें

मनी मैनेजमेंट के टिप्स अपनाएं जेब कभी भी नहीं होगी खाली, सेविंग को पहले रखें और खर्च बाद में करें

समझदारी
बिजनेस डेस्क

आज के समय में बहुत से लोग अच्छी कमाई करते हैं, लेकिन हर महीने यह महसूस करते हैं कि पैसा जैसे जेब से गायब हो जाता है। उनके पास कोई स्पष्ट योजना नहीं होती कि पैसा कहां जा रहा है और आखिर बचत कैसे करनी चाहिए। यह समस्या आज के समय में लगभग हर घर में देखने को मिलती है। कई लोग सही तरीके से पैसे को मैनेज नहीं करते, जिसकी वजह से ठीक-ठाक कमाई होने के बावजूद आर्थिक तनाव बना रहता है। अधिकतर लोगों में यही गलती रहती है कि वो कमाते तो ठीक-ठाक हैं, लेकिन पैसों को संभालने का कोई सिस्टम नहीं बनाते। इससे हर महीने के अंत में पैसे के मामले में निराशा होती है। अगर सही मनी मैनेजमेंट टिप्स अपनाए जाएं, तो कमाई को सही दिशा में लगाया जा सकता है और खुद को आर्थिक रूप से मजबूत बनाया जा सकता है। इस रिपोर्ट में हम आपको बताएंगे ऐसे ही कुछ टिप्स जो आपको सही मनी मैनेजमेंट के गुर सिखाएंगे।

खर्च करने से पहले बचत को ऑटोमैटिक बनाएं

पहला और सबसे महत्वपूर्ण सुझाव है कि सेविंग को पहले रखें और खर्च बाद में करें। ज्यादातर लोग महीने का पूरा बजट बनाने के बजाय जितना बचेगा उतना बचत में डालते हैं, लेकिन यह तरीका अक्सर काम नहीं करता।

उनका सुझाव है कि महीने के पहले दिन ही अपने अकाउंट से एक तय रकम ऑटोमैटिक ट्रांसफर करें। यह रकम बचत खाते या निवेश खाते में जा सकती है। इससे न सिर्फ बचत हो जाएगी, बल्कि मन में पैसों को लेकर तनाव भी कम होगा। ऑटोमैटिक बचत करने वाले लोग महीने के अंत में पैसे के मामले में ज्यादा सुरक्षित महसूस करते हैं और बड़े खर्चों के लिए भी तैयार रहते हैं।

हर खर्च को ऐप में ट्रैक करें

दूसरा टिप है बजटिंग ऐप्स का इस्तेमाल करना। कई लोग खर्च सिर्फ याद्दाश्त या नोटबुक पर रखते हैं, लेकिन इस तरह उनका सही हिसाब नहीं बन पाता। बजटिंग ऐप्स के माध्यम से हर छोटा-बड़ा खर्च रिकॉर्ड करें। जब लोग हर खर्च को ऐप में नोट करते हैं, तो उन्हें पता चलता है कि पैसा वास्तव में कहां जा रहा है। छोटे-छोटे खर्च जैसे कैफे में कॉफी, ऑनलाइन सब्सक्रिप्शन या अनावश्यक शॉपिंग मिलकर बड़ी रकम बनाते हैं।" ऐप्स आपको खर्च के हिसाब से रिपोर्ट भी देते हैं, जिससे पता चलता है कि किस जगह से बचत की जा सकती है।

कैशबैक और रिवॉर्ड्स से स्मार्ट कमाई करें

तीसरा टिप है कैशबैक और रिवॉर्ड। आजकल लगभग हर बैंक, क्रेडिट कार्ड और पेमेंट ऐप में रिवॉर्ड पॉइंट्स, कैशबैक और रेफरल बोनस होते हैं। छोटे-छोटे ऑफर्स को इग्नोर करने से आप अपनी कमाई का हिस्सा गंवा सकते हैं। यूपीआई ऑफर्स, क्रेडिट कार्ड रिवॉर्ड्स और रेफरल बोनस को जोड़कर देखें, तो सालाना लाखों रुपये तक की बचत या स्मार्ट रिटर्न संभव है। यह तकनीक केवल उन लोगों के लिए नहीं है जो बड़ी कमाई करते हैं, बल्कि छोटे खर्च वाले लोग भी इसका फायदा उठा सकते हैं।

दोस्तों के साथ खर्च बांटें, बोझ न लें

कई बार लोग पूरी बिलिंग खुद उठाते हैं, चाहे वह डिनर हो, मूवी टिकट हों या ट्रिप का खर्च। चौथा टिप है कि खर्च को आपस में शेयर करें। आजकल कई ऐप्स और डिजिटल प्लेटफॉर्म्स ऐसे हैं जो दोस्तों के साथ खर्च बांटना आसान बनाते हैं। जब आप खर्च शेयर करते हैं, तो न केवल आपकी जेब पर बोझ कम होता है, बल्कि पैसे के इस्तेमाल का हिसाब भी साफ रहता है। इससे अनावश्यक उधारी लेने की जरूरत भी नहीं पड़ती।"

पैसे के लिए सिस्टम बनाएं, तनाव खुद कम होगा

छठा और अंतिम टिप यह है कि पैसे के लिए सिस्टम बनाएं। जब हर महीने का खर्च, बचत और निवेश तय सिस्टम के अनुसार होता है, तो मानसिक तनाव अपने आप कम हो जाता है। कई लोग पैसों के मामले में तनाव में रहते हैं, लेकिन जब एक साधारण सिस्टम अपनाया जाता है, जैसे ऑटो सेविंग, खर्च ट्रैक करना और निवेश करना, तो चिंता अपने आप कम हो जाती है। यह तरीका मानसिक शांति के साथ-साथ आर्थिक मजबूती भी देता है।

छोटी बचत को लंबी निवेश आदत बनाएं

पांचवां टिप है एसआईपी या लंबी अवधि के निवेश में छोटी बचत को बदलना। अक्सर लोग सोचते हैं कि सिर्फ बड़ी रकम का निवेश करना ही फायदा देगा, लेकिन बाजार के जानकारों का कहना है कि छोटी रकम भी लंबी अवधि में वेल्थ क्रिएट कर सकती है। वो कहते हैं सिर्फ 500 रुपये महीना भी एसआईपी में निवेश करके 10-15 साल में अच्छी राशि जमा की जा सकती है। इसका सबसे बड़ा फायदा यह है कि यह आदत बन जाती है और नियमित निवेश से वित्तीय सुरक्षा मिलती है।

खबर संक्षेप

राष्ट्रीय सेवा योजना शिविर का शुभारंभ

बहल। बीआरसीएम ज्ञानकुंज स्कूल में श्री राजनारायण तिवारी सभागार में सात दिवसीय राष्ट्रीय सेवा योजना शिविर का शुभारंभ किया गया। कार्यक्रम में वक्ताओं ने एनएसएस को परिभाषित करते हुए इसे विद्यार्थियों में सेवा, अनुशासन, नेतृत्व क्षमता व सामाजिक दायित्व की भावना का विकास करने वाला बताया। शिविर प्राचार्य राजेश झाझडिया के मार्गदर्शन में व एनएसएस समंवयक जोगेन्द्र सिंह के नेतृत्व में आयोजित किया जाएगा।

रक्तदान से बड़ा कोई दान नहीं : डॉ.पवन

भिवानी। गांव बामला स्थित वीर शहीद नायक शीशपाल सिंह राजकीय वमा विद्यालय में चल रहे सात दिवसीय एनएसएस शिविर का शिविर का समापन हुआ। शिविर के अंतिम दिन को यादगार बनाने के लिए विद्यालय परिसर में रक्तदान शिविर लगाया, जिसमें स्थानीय ग्रामीणों व युवाओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। रक्तदान शिविर का उद्घाटन हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड के चेयरमैन डॉ. पवन कुमार शर्मा ने रिबन काटकर किया।

बिजलीघर के पास पर खड्डे से दुर्घटना की आशंका

भिवानी। बिचला बाजार बिजलीघर के पास बने गड्ढे के मरम्मत की मांग को लेकर भाजपा मजदूर प्रकोष्ठ के प्रदेश सहसंयोजक भगवानदास कालिया ने शनिवार को दुकानदारों के साथ धरने पर बैठकर रोष जताया। कालिया ने कहा कि ये खड्डा पिछले काफी समय से बना हुआ है और इससे दुर्घटना की आशंका बनी रहती है। दुकानदार भी इससे काफी परेशान है। जिला प्रशासन को भी इस बारे में अवगत करवाया गया,

माकपा ने कानून व्यवस्था पर किए सवाल

भिवानी। मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी के जिला सचिव मंडल ने प्रदेश में धार्मिक अल्पसंख्यकों के खिलाफ बढ़ती घटनाओं व खराब होती कानून व्यवस्था पर गहरी चिंता प्रकट की है। माकपा जिला सचिव कामरेड ओमप्रकाश ने बताया कि फिरकापरस्त ताकतों द्वारा धर्म के नाम पर पैदा किए जा रहे नफरती माहौल के जरिए प्रदेश में आपसी सौहार्द को ठेस पहुंचाने की कोशिश की जा रही हैं।

विद्यार्थियों में योग के प्रति उत्साह देखने को मिला

बवानीखेड़ा। एनएसएस (राष्ट्रीय सेवा योजना) के सात दिवसीय विशेष शिविर के चौथे दिन का आयोजन विद्यालय परिसर में सफलतापूर्वक किया गया। शुरुआत प्रातःकाल योगाभ्यास से हुई, जिसमें आयुष विभाग से योग सहायक गजानंद कौशिक मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। उन्होंने स्वयंसेवकों को योग के महत्व, उसके शारीरिक व मानसिक लाभों के बारे में विस्तार से जानकारी दी तथा विभिन्न योगासनों का अभ्यास करवाया। इस कार्यक्रम की आयोजक कु. कुसुम रहीं।

स्वयंसेवकों ने सीखा गोवंश सेवा का पाठ

भिवानी। गांव दुल्हेड़ी स्थित राजकीय मॉडल संस्कृति वमा विद्यालय में चल रहा सात दिवसीय एनएसएस शिविर 5वें दिन में प्रवेश कर गया। प्राचार्य सतीश कुमार सांगवान के मार्गदर्शन एवं कार्यक्रम अधिकारी जयवीर के नेतृत्व में शिविर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व निर्माण और सामाजिक जिम्मेदारी का सशक्त माध्यम बन रहा है।

द्रोणाचार्य अवॉर्डी कोच अशन को मातृशोक

भिवानी। द्रोणाचार्य अवॉर्डी भारतीय कबड्डी कोच अशन कुमार सांगवान की माता चांदकौर का 101 वर्ष की आयु में निधन हो गया। स्वर्गीय चांदकौर का जीवन सादगी, त्याग और उच्च नैतिक मूल्यों की प्रतिमूर्ति था। 101 वर्ष की लंबी आयु के दौरान उन्होंने न केवल परिवार को ममता की छांव दी, बल्कि बच्चों को राष्ट्रसेवा और खेल के प्रति समर्पित होने के संस्कार भी दिए।

मासिक माघ मेला महोत्सव-कल्पवास का आयोजन

कलश यात्रा के साथ मास परायण श्री राम कथा का भव्य शंखनाद

त्याग, तपस्या और आत्म-शुद्धि का महीना माघ मास : महंत चरणदास

हरिभूमि न्यूज ⏭भिवानी

धर्म नगरी और छोटी काशी के नाम से विख्यात भिवानी की पावन धरा पर एक बार फिर भक्ति की अमृत धारा बहने जा रही है। स्थानीय हनुमान ढ़ाणी स्थित हनुमान जोहड़ी धाम में मासिक माघ मेला महोत्सव-कल्पवास का आयोजन किया जा रहा है। इस महोत्सव का मुख्य आकर्षण मास परायण श्री राम कथा है, जिसकी शुरुआत शनिवार को हनुमान जोहड़ी मंदिर से कलश यात्रा के साथ हुई। कथा के शुभारंभ पर आयोजित कलश यात्रा में सैकड़ों महिलाओं और श्रद्धालुओं ने भाग लिया। सिर पर मंगल कलश धारण किए कल्पवासियों और भक्तों के उत्साह से पूरा वातावरण जय श्री राम के जयघोष से गुंजायमान हो उठा। इस महोत्सव के दौरान न केवल राम कथा का रसपान होगा, बल्कि विश्व शांति की कामना के साथ महायज्ञ भी संपन्न किया जा रहा है। कार्यक्रम के सानिध्यकर्ता बालयोगी महंत चरणदास महाराज ने इस अवसर पर भक्तों को संबोधित करते हुए कहा कि माघ मास त्याग, तपस्या और आत्म-शुद्धि का महीना है। भिवानी की इस पावन धरा पर हम कल्पवास की उस परंपरा को जीवंत कर रहे हैं, जो प्रायः प्रयागराज के संगम तट पर देखी जाती है। श्री राम कथा केवल एक कहानी नहीं, बल्कि जीवन जीने की कला है। उन्होंने बताया कि इस एक महीने के कल्पवास और कथा श्रवण से मनुष्य के जन्म-जन्मांतर के पाप कट जाते हैं। आयोजन समिति और कथा व्यास पंडित विजय भारद्वाज बुवानीवाले के अनुसार एक महीने तक चलने वाले इस कार्यक्रम रोजाना प्रातः 5 से 6 बजे तक जोहड़ी सरोवर (अमृत कुंड) में स्नान, हवन, पूजन और दीपदान, प्रातः 6 से सवा 7 बजे तक नगर परिक्रमा और प्रभात फेरी का आयोजन होगा।

भिवानी। शहर में कलशयात्रा निकालती महिलाएं। फोटो : हरिभूमि

नगर परिक्रमा भी जारी रहेगी

इस दौरान नगर परिक्रमा भी जारी रहेगी। इस मौके पर मुख्य य यजमान के तौर पर काता गर्ग व प्रकाश गर्ग रहे। इस मौके पर राजबाला गर्ग, प्रवीण गर्ग, संस्कृत प्रवक्ता सुनीता कुमारी, ललीता, बाला, ज्योति, सुमन, सौम्या, सुमन, रामबाई, राजबाला, सावित्री, अनिता, ललिता बासिया, ममता, मूर्ति, दर्शना, किरण, शीला, सीता, मंजू रानी, पूजा, बेबी सहित अनेक श्रद्धालुगण मौजूद रहे।

सभी का सामाजिक दायित्व: तंवर

■ मां सरस्वती के समक्ष दीप प्रज्ज्वलन और वन्दे मातरम के साथ कार्यक्रम की शुरुआत

हरिभूमि न्यूज ⏭बवानीखेड़ा

बलियाली के राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में चल रहे सात दिवसीय एनएसएस शिविर के दूसरे दिन की शुरुआत बड़ी शानदार रही। मुख्य अतिथि के रूप में जिला भिवानी के डी.पी.सी. शिव कुमार तंवर, विशिष्ट अतिथि के रूप में प्राचार्य एवं एपीसी का कार्य संभाल रहे विवेक अदलखा ने अपनी गरिमामयी उपस्थिति दर्ज की। कार्यक्रम की अध्यक्षता विद्यालय प्राचार्य जयबीर सिंह ने की। माँ सरस्वती के समक्ष दीप प्रज्वलन और वन्दे मातरम के साथ कार्यक्रम की शुरुआत हुई।

बवानीखेड़ा। बलियाली के राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में चल रहे सात दिवसीय एनएसएस शिविर के दूसरे दिन संबोधित करते मुख्याअतिथि डीपीसी शिव कुमार तवंर।

ये रहे मौजूद

डीपीसी ने स्वयंसेविकाओं को समाज सेवा के लिए प्रेरित करते हुए कहा कि हम जहाँ भी रहते हैं, जो भी काम करते हैं, वहाँ पर भी देश सेवा में अपना योगदान दे सकते हैं। इस अवसर पर कार्यक्रम अधिकारी डॉ. कविता तंवर, हिंदी प्रवक्ता रोशनी देवी, ए.बी.आर.सी. सुभाष, गणिता देवी, हर्ष कुमार व विद्यालय की स्वयंसेविकायें उपस्थित थी।

शीतकालीन शिविर का भव्य आयोजन

बवानीखेड़ा। जमालपुर के राजकीय कन्या उच्च विद्यालय में कक्षा 6 से 8 तक के विद्यार्थियों के लिए 1 से 5 दिवसीय शीतकालीन कौशल विकास शिविर का सफल आयोजन किया गया। इस शिविर का उद्देश्य विद्यार्थियों में कौशल विकास, रचनात्मक सोच, स्वास्थ्य जागरूकता और आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देना रहा। शिविर को सफल बनाने में डीपीसी शिव कुमार तंवर, प्राचार्य एवं एपीसी का कार्य संभाल रहे विवेक कुमार का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ।

● विद्यार्थियों में निखरी रचनात्मकता और जीवन कौशल

चांदवास में एनएसएस शिविर का भव्य शुभारंभ

हरिभूमि न्यूज ⏭बाढड़ा

शहीद मेजर ईश्वर सिंह राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, चांदवास में राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसएस) इकाई द्वारा सात दिवसीय विशेष शिविर का शुभारंभ किया गया। शिविर का उद्घाटन प्राचार्य विशम्बर के करकमलों से संपन्न हुआ। उन्होंने मां सरस्वती के समक्ष दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम की विधिवत शुरुआत की तथा एनएसएस स्वयंसेवकों को सेवा, समर्पण और अनुशासन के मार्ग पर चलने का आह्वान किया। प्राचार्य हरिकिशन राणा ने अपने संबोधन में कहा कि राष्ट्रीय सेवा योजना विद्यार्थियों को समाज की वास्तविक समस्याओं से जोडने का सशक्त माध्यम है।

सफाई अभियान चलाया

शिविर के प्रथम दिवस स्वयंसेवकों द्वारा विद्यालय परिसर में व्यापक साफ-सफाई अभियान चलाया गया। स्वयंसेवकों ने कक्षाओं, प्रांगण और आसपास के क्षेत्रों की सफाई कर स्वच्छता का संदेश दिया। इस अवसर पर रमेश कुमार, अनिता देवी, संजय सहारण, विजेंद्र शास्त्री, ललित कुमार लिपिक सहित विद्यालय का समस्त शिक्षक एवं गैर-शिक्षक स्टाफ उपस्थित रहा।

साइबर सुरक्षा के प्रति किया जागरूक

■ बच्चों को साइबर क्राइम से संबंधित विभिन्न पहलुओं पर भी जानकारी दी

हरिभूमि न्यूज ⏭चरखी दादरी

राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय झोझूकलां में चल रहे सात दिवसीय राष्ट्रीय सेवा योजना शिविर के दौरान पुलिस प्रशासन के अधिकारियों ने शिरकत कर विद्यार्थियों को महत्वपूर्ण जानकारियां प्रदान की।

साइबर थाना झोझूकलां के एसआई अंकित कुमार ने स्वयंसेवकों को ट्रैफिक नियमों की जानकारी देने के साथ-साथ साइबर क्राइम से संबंधित विभिन्न पहलुओं पर विस्तार से प्रकाश डाला। एसआई अंकित कुमार ने बताया कि आज के डिजिटल युग में साइबर अपराध तेजी से बढ़ रहे हैं, ऐसे में जागरूकता ही सबसे बड़ा हथियार है।

चरखी दादरी। विद्यार्थियों को साइबर अपराध के प्रति जागरूक करते पुलिस अधिकारी।

सड़क सुरक्षा पर भी विचार रखे

उन्होंने ऑनलाइन ठगी, फर्जी कॉल, लिंक और ओटीपी शेयर करने से होने वाले नुकसान के बारे में समझाया। कार्यक्रम अधिकारी संजय कुमार ने सड़क सुरक्षा पर अपने विचार रखते हुए कहा कि हेलमेट, सीट बेल्ट और ट्रैफिक नियमों का पालन कर हम कई दुर्घटनाओं से बच सकते हैं। प्राध्यापक धर्मेंद्र कुमार ने स्वयंसेवकों को सोशल मीडिया और विभिन्न ऑनलाइन प्लेटफॉर्म का उपयोग पूरी सतर्कता और समझदारी से करने की सलाह दी।

विवेकानंद से प्रेरणा लेकर युवा आगे बढ़ें

■ सात दिवसीय राष्ट्रीय सेवा योजना शिविर का समापन

हरिभूमि न्यूज ⏭बवानीखेड़ा

बवानी खेड़ा के राजकीय मॉडल संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में आयोजित सात दिवसीय राष्ट्रीय सेवा योजना, एनएसएस शिविर का समापन समारोह गरिमामय एवं प्रेरणादायक वातावरण में संपन्न हुआ। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में भिवानी के डीपीसी शिवकुमार तंवर तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय मानहेरू के प्राचार्य एवं एपीसी का कार्य संभाल रहे विवेक अदलखा ने शिरकत की। समारोह का शुभारंभ माँ सरस्वती के चरणों में दीप प्रज्वलन के साथ किया गया।

पुष्पगुच्छ भेंट किया

इस अवसर पर विद्यालय प्राचार्या संतोष भाकर द्वारा मुख्य अतिथि एवं विशिष्ट अतिथि को पुष्पगुच्छ भेंट कर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम अधिकारी नवीन कुमार ने सभी अतिथियों का औपचारिक स्वागत किया। कार्यक्रम के दौरान स्वयंसेविका नरेंद्र बाला ने एनएसएस पर आधारित भावपूर्ण कविता प्रस्तुत की। स्वयंसेविका दीपिका ने विवेकानंद के जीवन से प्रेरणा लेकर युवाओं को आदर्शों पर चलने का संदेश दिया। स्वयंसेवक प्रिंस ने सभी स्वयंसेवकों से नशे से दूर रहने का आह्वान किया।

बवानीखेड़ा। राजकीय मॉडल संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में आयोजित सात दिवसीय राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसएस) शिविर के समापन समारोह में संबोधित करते हुए। फोटो : हरिभूमि

राष्ट्रगान से समापन

मुख्य अतिथि शिवकुमार तंवर ने विद्यार्थियों को समाज हित, समाज सेवा तथा शारीरिक एवं मानसिक रूप से स्वस्थ रहने के लिए प्रेरित किया। समारोह में सत्यवान यादव (हिंदी प्राध्यापक), कृष्ण कुमार रोहिल्ला (फिजिक्स प्राध्यापक), हुनेश कुमार अग्रवाल (मैथमेटिक्स प्राध्यापक) एवं रमेश कुमार की गरिमामयी उपस्थिति भी रही। अंत में प्राचार्या संतोष भाकर ने सभी अतिथियों, प्राध्यापकों, स्टाफ सदस्यों एवं स्वयंसेवकों का धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम समापन राष्ट्रगान के साथ हुआ।

बच्चों को मोबाइल के अधिक प्रयोग से दूर रखें

■ आनंद स्कूल फॉर एक्सीलेंस मिलकपुर में पेरेंट्स-टीचर मीटिंग का आयोजन

हरिभूमि न्यूज ⏭बवानीखेड़ा

मिलकपुर स्थित आनंद स्कूल फॉर एक्सीलेंस में पेरेंट्स-टीचर मीटिंग का सफल एवं सुव्यवस्थित आयोजन किया गया। बैठक का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों की शैक्षणिक प्रगति की समीक्षा करना, आगामी बोर्ड परीक्षाओं की तैयारी पर चर्चा करना तथा अभिभावकों के साथ विद्यालय से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारियों का आदान-प्रदान करना रहा।

कार्यक्रम का शुभारंभ विद्यालय प्रबंधन द्वारा सरस्वती पूजन के साथ किया गया। इसके पश्चात विद्यालय के अध्यक्ष आनंद यादव ने अपने संबोधन में कहा कि विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए शिक्षक एवं अभिभावक दोनों का सहयोग अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने विशेष रूप से बच्चों को मोबाइल फोन के अत्यधिक प्रयोग से दूर रखने की आवश्यकता पर बल देते हुए कहा कि मोबाइल बच्चों की दिशा एवं मानसिकता को भटका रहा है, जिससे उनका ध्यान पढ़ाई और लक्ष्य से हटता जा रहा है। उन्होंने अभिभावकों से बच्चों पर सकारात्मक निगरानी रखने का आग्रह किया। विद्यालय के प्रिंसिपल नीतीश मिश्र ने अभिभावकों को सीबीएसई बोर्ड परीक्षा प्रणाली के बारे में विस्तार से जानकारी दी।

बवानीखेड़ा। मिलकपुर स्थित आनंद स्कूल फॉर एक्सीलेंस में पेरेंट्स-टीचर मीटिंग के सफल एवं सुव्यवस्थित आयोजन में संबोधित करते हुए। फोटो : हरिभूमि

सुझाव साझा किए

अब बोर्ड परीक्षाएं दो बार आयोजित की जाएंगी, जिनमें प्रथम परीक्षा अत्यंत आवश्यक होगी। इसके बाद शिक्षकों द्वारा कक्षा-वार विद्यार्थियों की शैक्षणिक स्थिति, उपस्थिति, गृहकार्य तथा आंतरिक मूल्यांकन की जानकारी अभिभावकों को दी गई। विशेष रूप से बोर्ड कक्षाओं के विद्यार्थियों की परीक्षा तैयारी, पुनरावृत्ति योजना एवं मानसिक संतुलन बनाए रखने के उपायों पर चर्चा की गई। इस अवसर पर विद्यालय के डायरेक्टर साहिल यादव सहित समस्त शिक्षक एवं स्टाफ सदस्य उपस्थित रहे। अभिभावकों ने भी सुझाव साझा किए और शिक्षकों से व्यक्तिगत संवाद कर बच्चों से जुड़ी समस्याओं पर चर्चा की।

शाकम्भरी देवी शोरेवाला मंदिर में की पूजा-अर्चना

■ मां शाकम्भरी जयंती पर हवन और भंडारे का आयोजन

हरिभूमि न्यूज ⏭भिवानी

शाकम्भरी देवी शोरेवाला मंदिर में मां शाकम्भरी जयंती महोत्सव श्रद्धा, आस्था एवं उल्लास के साथ भव्यता से मनाया।

मंदिर परिसर को फूल-मालाओं और रंग-बिरंगी लाइटों से आकर्षक ढंग से सजाया। सुबह से ही श्रद्धालुओं की भारी भीड़ मंदिर में दर्शन के लिए उमड़ रही थी। मंदिर के महंत पंडित प्रदीप भारद्वाज कांटीवाले ने बताया कि कार्यक्रम की शुरुआत पूजा-अर्चना, हवन और मां शाकम्भरी देवी की विशेष आरती से की। पश्चात भजन-कीर्तन का आयोजन हुआ, जिसमें भक्तों ने भक्ति गीतों पर झूमते हुए मां का गुणगान किया।

भिवानी। भंडारे में प्रसाद ग्रहण करते श्रद्धालु। फोटो : हरिभूमि

जयकारों की रही गूंज

उन्होंने बताया कि पूरे वातावरण में जयकारों और भजनों की गूंज से भक्तिमय माहौल बना रहा। आयोजन के दौरान श्रद्धालुओं के लिए प्रसाद वितरण एवं भंडारे की व्यवस्था की। भाजपा के जिलाध्यक्ष वीरेंद्र कौशिक विशेष रूप से उपस्थित रहे। इनके साथ जोगीवाला मंदिर के प्रदीप नाथ, गोपालनाथ सहित अनेक संत-महात्मा, गणमान्य नागरिक कार्यक्रम में शामिल हुए। अतिथियों ने मां शाकम्भरी देवी की पूजा अर्चना कर समाज में सुख-समृद्धि, शांति और जनकल्याण की कामना की। मौके पर कुलदीप भारद्वाज, राजेश गोदारा, संदीप बजाज, रोहित गोयल, आशिष शोरेवाला, दीपक शोरेवाला, रामेश्वर नाथ, पंडित रामबिलास शर्मा वेदपाठी, प्रदीप सुई, रुद्र भारद्वाज मौजूद रहे।

झोझूकलां महाविद्यालय की छात्रा रीतिका का इंटरनेशनल प्रतियोगिता के लिए चयन

चरखी दादरी। महिला महाविद्यालय झोझूकलां की बीए प्रथम वर्ष की छात्रा रीतिका ने 10 मीटर एयर राइफल शूटिंग की नेशनल ट्रायल के दौरान 616.7 यूथ में क्वालीफाई कर इन्टरनेशनल प्रतियोगिता के लिए चयन पाया हैं। यह ट्रायल भोपाल में आयोजित की गई। छात्रा रीतिका की उपलब्धि पर महाविद्यालय में हर्ष का माहौल है। दूसरी तरफ रितिका की बहन मुस्कान ने खेलों हरियाणा ओलम्पिक गेम्स में 53 किलोग्राम भारवर्ग की कुश्ती प्रतियोगिता में स्वर्ण पदक जीतकर महाविद्यालय तथा क्षेत्र का नाम रोशन किया है। इन दोनों छात्राओं की उपलब्धियों पर प्रबन्धक समिति के प्रधान अधिवक्ता सुरेन्द्रपाल सिंह, सचिव सुशील कुमार, उपप्रधान गदर सिंह, कोषाध्यक्ष मांगेराम, सांगवान खाप के 13 के प्रधान सुरजभान जाट, समिति सदस्य धर्मपाल, राज सरपंच चन्द्रेणी, हरिकिशन, तालेराम, प्राचार्या डॉ. मन्जू सांगवान व कबड्डी कोच सोनू सांगवान आदि ने उन्हें बधाई दी।

आक्रोश भवन निर्माण मजदूर संघ के जिला प्रधान रामोतार खोरड़ा ने बोला हमला

फर्जीवाड़े की आड़ में असली मजदूरों के हक छीने जा रहे, 17-18 को सिंचाई मंत्री के आवास पर महापड़ाव

हरिभूमि न्यूज ⏭भिवानी

भवन निर्माण मजदूर संघ के जिला प्रधान रामोतार खोरड़ा ने हमला बोलते हुए कहा कि श्रम मंत्री अनिल विज का यह बयान कि 90 दिनों की वेरिफिकेशन में फर्जीवाड़ा हुआ, सरासर झूठ और मजदूरों के साथ क्रूर मजाक है! यह अज्ञानता नहीं, बल्कि मजदूरों को कुचलने की सुनियोजित साजिश है। वे आज अपने भिवानी कार्यालय पर मजदूर उसको संबोधित कर रहे थे उन्होंने कहा कि सच्चाई यह है कि 2014 से 2018 तक भाजपा सरकार ने राजनीतिक लाभ के लिए कैंप लगाकर लाखों मजदूरों का पंजीकरण किया – जिसमें 60 प्रतिशत से ज्यादा फर्जी साबित हो रहे हैं। यह सरकार ने खुद मजदूरों के साथ धोखा किया, अपात्र लोगों को लाभ बांटा और अब असली मेहनतकश मजदूरों को सजा दे रही है! 2018 में ऑनलाइन सिस्टम लाकर मजदूरों को लूटने का लाइसेंस दे दिया गया। निर्माण स्थल पर खून-पसीना बहाने वाले मजदूर को अपनी 90 दिन की वेरिफिकेशन के लिए दर-दर भटकना पड़ा, और हुई भी तो बिना रिश्वत के नहीं।

मजदूर कभी बर्दाश्त नहीं करेगा

श्रम मंत्री अनिल विज मजदूरों के वैध लाभ रोककर उन्हें 'फर्जी' बता रहे हैं यह घोर गैरकानूनी और मजदूरों का सीधा अपमान है। मजदूरों को फर्जी कहना मतलब उनकी मेहनत, उनके संघर्ष और उनके हक पर थूकना है। यह अपमान मजदूर कभी बर्दाश्त नहीं करेगा। मजदूर नेताओं ने कहा कि सरकार मजदूरों की जांच करने की बजाय अपनी पिछली सरकारों और भ्रष्ट अधिकारियों की जांच करे। पंचायत सचिवों व पटवारियों को वेरिफिकेशन का अधिकार देकर वर्क स्लिप के नाम पर मजदूरों की खुली लूट करवाई गई। मजदूरों ने आंदोलन किए, लेकिन किसी की नहीं सुनी गई।

पहले यूनियनों को वेरिफिकेशन का अधिकार था

ध्यान रहे, 2018 से पहले यूनियनों को वेरिफिकेशन का अधिकार था। तब मजदूर आसानी से लाभ लेता था। आज अनिल विज ने फिर वही पुराना फरमान थोप दिया। श्रम बोर्ड हो, मनरेगा, बीपीएल राशन कार्ड या प्रधानमंत्री आवास योजना हर जगह असली मजदूर 'फर्जी' दिख रहा है। सरकार ने सभी अधिकार केंद्रीकृत करके मजदूरों को लूटने का खुला खेल शुरू कर दिया है। मजदूर नेताओं ने आगाह किया मजदूरों के हकों पर यह हमला बर्दाश्त नहीं किया जाएगा,अगर सरकार ने तुरंत लाभ बहाल नहीं किए और फर्जीवाड़े की जड़ तक जांच नहीं की, तो संघर्ष और तेज होगा।

भारत की पहली महिला शिक्षिका और समाज सुधारक माता को कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने दी श्रद्धांजलि

कांग्रेस शहरी जिला अध्यक्ष प्रदीप जोगी ने भाजपा की विभाजनकारी राजनीति पर साधा निशाना

सावित्रीबाई फुले की जयंती पर उनके दिखाए पद चिन्हों पर चलने का सामूहिक संकल्प लिया

भिवानी। सावित्री बाई फुले के चित्र पर पुष्प अर्पित करते कांग्रेसजन। फोटो : हरिभूमि

भिवानी। सावित्रीबाई फुले को श्रद्धांजलि देते वूमैन हेल्पिंग सोसायटी के सदस्य। फोटो : हरिभूमि

भिवानी। देश की पहली महिला शिक्षक सावित्रीबाई फुले को नमन करते नप चेयरमैन बक्शीराम सैनी व अन्य।

हरिभूमि न्यूज ▶▶ भिवानी

भारत की पहली महिला शिक्षिका और समाज सुधारक माता सावित्रीबाई फुले की जयंती के अवसर पर शनिवार को भिवानी में कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने उन्हें श्रद्धासुमन अर्पित किए। रोहतक रोड स्थित कांग्रेस कार्यालय में आयोजित इस कार्यक्रम का नेतृत्व कांग्रेस शहरी जिला अध्यक्ष प्रदीप जोगी ने किया। इस दौरान उपस्थित कार्यकर्ताओं ने सावित्रीबाई फुले के चित्र पर पुष्प अर्पित कर उन्हें नमन किया और समाज एवं राष्ट्र हित में उनके दिखाए गए पदचिन्हों पर चलने का सामूहिक संकल्प लिया। कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए कांग्रेस शहरी जिला अध्यक्ष प्रदीप जोगी ने सावित्रीबाई फुले के संघर्षमयी जीवन और उनके द्वारा किए गए क्रांतिकारी कार्यों पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि माता सावित्रीबाई फुले ने उस दौर में महिला शिक्षा की मशाल जलाई जब समाज में अंधकार और कुरीतियां चरम पर थीं। उन्होंने ना केवल महिलाओं को शिक्षित करने का बीड़ा उठाया, बल्कि समाज के वंचित वर्गों के अधिकारों के लिए भी जीवनपर्यंत संघर्ष किया। उनका जीवन हमारे लिए प्रेरणा का पुंज है। अपने संबोधन के दौरान प्रदीप जोगी ने राजनीतिक दलों की कार्यशैली की तुलना करते हुए भारतीय जनता पार्टी पर तीखे प्रहार किए। जोगी ने कहा कि कांग्रेस पार्टी ने हमेशा महात्मा ज्योतिबा फुले और सावित्रीबाई फुले जैसे महापुरुषों के आदर्शों को शासन और संगठन में आत्मसात किया है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस ने हमेशा महापुरुषों की विचारधारा को अपनाते हुए शिक्षा, खेल और राष्ट्र की उन्नति से जुड़ी गतिविधियों को प्राथमिकता दी है। कांग्रेस का लक्ष्य समाज के हर वर्ग को साथ लेकर चलना रहा है। इसके साथ ही प्रदीप जोगी ने आरोप लगाया कि वर्तमान भाजपा सरकार महापुरुषों के नाम का इस्तेमाल केवल राजनीति के लिए कर रही है।

वूमैन हैल्पिंग सोसायटी ने सावित्रीबाई फुले को किया नमन

भिवानी। देश में महिला शिक्षा की अलख जगाने वाली सावित्रीबाई फुले ने हमेशा महिलाओं के अधिकारों, लड़कियों की शिक्षा, मानवीय संवेदनशीलता, महामारी से जूझने एवं कुरीतियों के खिलाफ खड़े होने की हिम्मत दिखाई। वे हमेशा बिना डरे हर मुद्दे को आगे लेकर आई और उसके खिलाफ खुलकर बात रखी, ये बात वूमैन हैल्पिंग सोसायटी की संस्थापिका एवं अध्यक्षा सुशीला देवी सिंह ने कही। वे देश की प्रथम महिला शिक्षिका सावित्रीबाई फुले की जयंती पर शनिवार को बावड़ी गेट पर उनके चित्र पर पुष्प अर्पित कर श्रद्धांजलि दे रही थी। उन्होंने कहा कि फुले ने देश में पहला स्कूल 1848 में पुणे में खोला। सावित्रीबाई कवियत्री थी, उनका सारा जीवन स्त्रियों की भलाई में बीता। उन्होंने देश में सबसे पहला स्कूल लड़कियों के लिए खोला और लड़कियों को शिक्षा का अधिकार दिलवाया। वर्ष 1998 में भारत ने सावित्रीबाई के सम्मान में डाक टिकट जारी कर उन्हें श्रद्धांजलि दी और उन्हें देश ही नहीं, बल्कि पूरी दुनिया महान महिला के तौर पर जानती है। सुशीला ने कहा कि बेटियां पढ़ रही है, वह केवल सावित्रीबाई फुले की ही देन है। उन्होंने कहा कि प्रत्येकवर्ग के लोगों को सबसे पहले बेटियों को शिक्षित करना चाहिए, अगर बिटियां शिक्षित होगी तो समाज में जागरूकता आएगी और हर क्षेत्र में बेटियां अपने देश का नाम रोशन करेगी। इस अवसर पर अधिवक्ता राजेश जांगड़ा, ममता अरोड़ा, सुमन शर्मा, सीता, हेमंत व सज्जन कौर आदि मौजूद रहे।

नारियों की शिक्षा एवं उनके उत्थान के बिना समाज का विकास असंभवः चेयरमैन सैनी

चरखी दादरी। देश की पहली महिला शिक्षक, महिलाओं की शिक्षा व उत्थान में अहम योगदान देने वाली सावित्रीबाई फुले की 195वीं जयंती पर सैनी समाज ने कार्यक्रम का आयोजन किया और उन्हें याद कर श्रद्धांजलि दी। वार्ड 13 के सैनीगंज मोहल्ला स्थित सैनी धर्मशाला परिसर में कार्यक्रम की अध्यक्षता नगर परिषद चेयरमैन बख्शीराम सैनी ने की। सैनी ने कहा कि आज समाज को सावित्रीबाई फूले जैसी विचारधाराओं की अत्यंत आवश्यकता है, वो मानती थी कि नारियों की शिक्षा एवं उनके उत्थान के बिना समाज का विकास अधूरा एवं असंभव है, वो आज भी प्रासंगिक है। उन्होंने कहा कि हम सबको मिलकर मातृशक्ति को सशक्त बनाने में अपना योगदान देना चाहिए। चेयरमैन सैनी ने सभी से आह्वान किया कि सब मिलकर आगे आए व नारियों को स्वाबलंबी एवं आत्मनिर्भर बनने में अपना यथासंभव सहयोग दें। इस दिशा में सरकार द्वारा चलाई गई योजनाओं का भी लाभ नागरिक उठाए। आयोजन के दौरान राजेंद्र सैनी ने सावित्रीबाई फूले के जीवन, उनके संघर्ष, आदर्शों आदि पर विस्तार से प्रकाश डाला। इस दौरान सैनीगंज प्रधान पवन सैनी, जिला कष्ट निवारण समिति सदस्य धर्मबीर सैनी, महेश सैनी, धर्मेंद्र सैनी, महावीर सैनी, कुलदीप सैनी, जयभगवान सैनी, मास्टर सुरेश सैनी, लोकेश गुप्ता, ओमप्रकाश, अजय सैनी, जितेंद्र सैनी, देवेंद्र सैनी, मोनू सैनी, एमसी कुलदीप, प्रवीन स्वामी व अमर सिंह आदि मौजूद थे।

आज प्रेरणा दिवस के रूप में मनाई जाएगी सावित्रीबाई की जयंती

भिवानी। सैनी कल्याण परिषद द्वारा महिला शिक्षा की अग्रदूत और देश की प्रथम महिला शिक्षिका माता सावित्रीबाई फुले की जयंती को प्रेरणा दिवस के रूप में बड़े ही हर्षोल्लास के साथ मनाया जाएगा। कार्यक्रम 4 जनवरी को सांस्कृतिक सदन में होगा, जिसकी सभी तैयारियां पूरी कर ली गई हैं। जयंती समारोह की पूर्व संध्या पर परिषद के प्रदेश प्रवक्ता ने कार्यक्रम की रूपरेखा सांझा करते हुए समाज के लोगों से इस पावन अवसर पर पहुंचने का आह्वान किया। सैनी ने बताया कि माता सावित्रीबाई फुले का जीवन संघर्ष और सेवा की प्रतिमूर्ति है। उन्होंने कहा कि माता सावित्रीबाई ने उस दौर में शिक्षा की अलख जगाई, जब बेटियों के लिए घर से निकलना भी दूभर था। आज की पीढ़ी को उनके जीवन से प्रेरणा लेनी चाहिए। हमारा उद्देश्य केवल जयंती मनाना नहीं, बल्कि उनके द्वारा दिखाए गए सामाजिक समरसता और शिक्षा के मार्ग पर चलना है। उन्होंने बताया कि माता सावित्रीबाई फुले का जन्म 3 जनवरी 1831 को महाराष्ट्र के नायगांव में हुआ था, उनका जीवन सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध एक निरंतर युद्ध था।

नारी शिक्षा, सामाजिक न्याय एवं समानता की अग्रदूत थी सावित्रीबाई फुलेः डॉ. विजय

चरखी दादरी। नेशनल इंटीग्रेटेड मेडिकल एसोसिएशन (नीमा) चरखी दादरी की ओर से भारत की प्रथम महिला शिक्षिका, समाज सुधारक एवं नारी सशक्तिकरण की प्रतीक सावित्रीबाई फुले की जयंती पर उन्हें श्रद्धापूर्वक नमन किया। सावित्रीबाई फुले का योगदान भारतीय समाज के इतिहास में मील का पत्थर है,ये बात नीमा दादरी के प्रधान डॉ. विजय शर्मा ने कही। उन्होंने कहा कि उस दौर में जब महिलाओं और दलित वर्ग को शिक्षा से वंचित रखा जाता था, सावित्रीबाई फुले ने सामाजिक रूढ़ियों, भेदभाव और विरोध के बावजूद महिलाओं, शोषितों और वंचितों के लिए शिक्षा का द्वार खोला। सावित्रीबाई फुले ने अपने पति महात्मा ज्योतिराव फुले के साथ मिलकर 1848 में पुणे में भारत का पहला बालिका विद्यालय स्थापित किया। डॉ. विजय ने बाल विवाह, सती प्रथा, जातिगत भेदभाव और छुआछूत जैसी कुप्रथाओं के विरुद्ध आवाज उठाई और विधवा पुनर्विवाह, नारी शिक्षा तथा सामाजिक समानता के लिए जीवनभर संघर्ष किया। सावित्रीबाई फुले का जीवन हमें संदेश देता है कि शिक्षा ही सामाजिक परिवर्तन का सबसे सशक्त माध्यम है। आज भी उनके विचार डॉक्टरों, शिक्षकों और समाज के प्रत्येक जागरूक नागरिक के लिए प्रेरणास्रोत हैं।

सावित्री देवी फुले की जयंती मनाई

भिवानी। भारत की पहली महिला शिक्षिका माता सावित्री बाई फुले का जन्मदिन आज बैंक कॉलोनी स्थित शांति भवन में मनाया गया कार्यक्रम की मुख्य अतिथि अधिवक्ता सुनीता गोलपुरिया ने कहा कि आज भी महिलाएं सामाजिक बेड़ियों में जकड़ी हुई है इन बेड़ियों को तोड़ने के लिए संघर्ष करें जिस प्रकार माता सावित्रीबाई फुले ने महिलाओं की शिक्षा के लिए काम किया आज हमें भी उनकी राह पर चलने की जरूरत है सावित्रीबाई फुले का जन्म 3 जनवरी 1831 को महाराष्ट्र के सतारा जिले के नायगांव में सावित्री बाई फुले का जन्म हुआ, और 9 वर्ष में उनकी शादी 12 वर्ष के ज्योतिराव फुले से करा दी गई।ज्योतिराव ने सावित्री बाई फुले को न सिर्फ शिक्षित किया, बल्कि उन्हें राष्ट्र निर्माण के लिए इसे तैयार किया जैसे किसी सांचे से सोना तप कर तैयार होता है।

संघ कार्यालय में मनाई गई सावित्रीबाई फुले की जयंती

भिवानी। बड़ चौक पर स्थित सर्व कर्मचारी संघ के कार्यालय में शनिवार को देश की प्रथम महिला शिक्षिका और महान समाज सुधारक सावित्रीबाई फुले की जयंती धूमधाम से मनाई गई। इस कार्यक्रम में वक्ताओं ने उनके जीवन संघर्ष, महिला शिक्षा और सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ उनके योगदान को याद किया। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता के तौर पर पहुंचे मास्टर वजीर सिंह ने सावित्रीबाई फुले के जीवन पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए बताया कि सावित्रीबाई फूले का जन्म 3 जनवरी 1831 को हुआ था। उनके पिता का नाम खन्दोजी नेवसे और माता का नाम लक्ष्मीबाई था। उन्होंने बताया कि सावित्रीबाई का विवाह मात्र 9 वर्ष की आयु में 1841 में महात्मा ज्योतिबा राव फुले से हुआ था। विवाह के समय वे अनपढ़ थीं, लेकिन अपने पति के सहयोग से उन्होंने शिक्षा ग्रहण की और अंततः देश की पहली महिला अध्यापिका बनने का गौरव प्राप्त किया। मास्टर वजीर सिंह ने उनके क्रांतिकारी कदमों का जिक्र करते हुए कहा कि सावित्रीबाई फूले ने 1848 में उन्होंने अपने पति के साथ मिलकर लड़कियों के लिए पहला स्कूल खोला। उन्होंने सती प्रथा, छुआछूत और बाल विवाह जैसी सामाजिक बुराइयों के खिलाफ पुरजोर आवाज उठाई।

भिवानी। सावित्री देवी फूले की जयंती पर आयोजित कार्यक्रम में कर्मचारियों को संबोधित करते हुए। फोटो : हरिभूमि

पराक्रमी योद्धा फाउंडेशन ने सावित्रीबाई फुले को किया नमन

भिवानी। देश की प्रथम महिला शिक्षिका सावित्रीबाई फुले को नमन करते पराक्रमी योद्धा फाउंडेशन के सदस्य। फोटो : हरिभूमि

भिवानी। पराक्रमी योद्धा फाउंडेशन ने महिला शिक्षा की जननी देश की प्रथम महिला शिक्षिका माता सावित्रीबाई फुले की जयंती पर शनिवार को अपने कार्यालय का उद्घाटन किया। मिनी बाईपास स्थित कार्यालय का उद्घाटन समारोह सामाजिक चेतना एवं संकल्प का संगम बना। समारोह का आगाज माता सावित्रीबाई फुले के चित्र पर पुष्प अर्पित कर एवं द्वीप प्रज्ज्वलित करके किया। इस दौरान उपस्थित सदस्यों ने सावित्रीबाई फुले के संघर्षों को याद किया। वक्ताओं ने बताया कि कैसे उन्होंने कट्टरपंथी विचारधाराओं का सामना करते हुए देश में महिला शिक्षा की नींव रखी। अतिथियों ने उनके जीवन आदर्शों को याद कर उन्हें आधुनिक भारत की प्रथम महिला शिक्षिका एवं समाज सुधारक के रूप में याद किया। उद्घाटन के बाद सभा को संबोधित करते हुए पराक्रमी योद्धा फाउंडेशन के पदाधिकारियों ने संस्था के भविष्य के रोडमैप को सांझा किया। इस मौके पर सुमन बाला ने कहा कि फाउंडेशन का उद्देश्य केवल कार्यालय खोलना नहीं, बल्कि एक ऐसा केंद्र बनाना है, जहां से सामाजिक बुराइयों के खिलाफ लड़ाई लड़ी जा सके। युवा पीढ़ी नशे की गिरफ्त में जा रही है, जिसे रोकना हमारी प्राथमिकता है।

सावित्रीबाई फुले के आदर्शों को नमन कियाः बुवानीवाला

भिवानी। वैश्य सीनियर सैकण्डरी स्कूल भिवानी में सावित्रीबाई फुले की जयन्ती मनाई गई। इस अवसर पर विद्यालय प्रबन्धकारिणी समिति के अध्यक्ष डा. पवन कुमार बुवानीवाला एवं महासचिव विजयकिशन अग्रवाल ने उस महान विभूती एवं समाज सुधारक को स्मरण किया जिन्होनें सेवा और शिक्षा के माध्यम से समाज में बदलाव लाने के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया। वह समानता, न्याय और करूणा के सिद्धान्तों के प्रति प्रतिबद्ध थी। उन्होंने ज्ञान एवं शिक्षा के माध्यम से जीवन को बदलने पर विशेष बल दिया। इसी कड़ी में विद्यालय के सीईओ महेश गर्ग ने विद्यालय आगमन पर डा. पवन कुमार बुवानीवाला एवं विजयकिशन अग्रवाल का स्वागत किया।

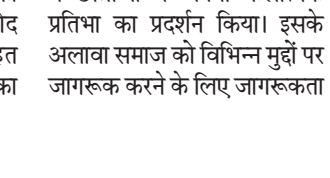

सावित्रीबाई फुले जयंती को संकल्प दिवस के रूप में मनाया

भिवानी। महिला शिक्षा की अलख जगाने वाली भारत की प्रथम महिला शिक्षिका और महान समाज सुधारक माता सावित्रीबाई फुले की जयंती के अवसर पर शनिवार को स्थानीय मिनी बाईपास, ढाणा रोड स्थित पराक्रमी योद्धा फाउंडेशन के कार्यालय पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। श्रद्धांजलि एवं संकल्प दिवस/" के रूप में मनाए गए इस कार्यक्रम में भारी संख्या में प्रबुद्ध नागरिक और फाउंडेशन के सदस्य एकत्रित हुए। कार्यक्रम का संयोजन फाउंडेशन की कार्यकारिणी सदस्य एवं शिक्षिका सुमन माला ने किया। उन्होंने सावित्रीबाई फुले के चित्र पर पुष्प अर्पित कर उन्हें नमन किया। उपस्थित जनसमूह को संबोधित करते हुए सुमन माला ने कहा कि माता सावित्रीबाई फुले ने जिस दौर में शिक्षा की मशाल जलाई, वह कांटों भरा रास्ता था। सामाजिक बाधाओं और तिरस्कार के बावजूद उन्होंने हार नहीं मानी। उनका जीवन हमें सिखाता है कि शिक्षा ही वह एकमात्र माध्यम है जिससे समाज की अंतिम पंक्ति में खड़े व्यक्ति और महिलाओं का सशक्तिकरण संभव है।

निर्माण मजदूरों ने फुले की जयंती पर पुष्प पर चढ़ाकर श्रद्धांजलि दी

बाढड़ा। महिलाओं को समाज में समानता का अधिकारी दिलाने में सावित्रीबाई फुले का अतुलनीय योगदान रहा है, जिसके कारण आज महिलाएं समाज में बराबरी का अधिकार प्राप्त कर रही हैं। यह बात सीटू के जिला संयोजक सुमेर सिंह और रोशन लाल धारणी ने गांव कारी धारणी व भाण्डवा में सावित्रीबाई फुले की जयंती के अवसर पर आयोजित कार्यक्रमों में कही। सीटू जिला संयोजक सुमेर सिंह व रोशन लाल धारणी ने कहा कि सावित्रीबाई फुले का जन्म महाराष्ट्र के सतारा जिले के नायगांव में हुआ था। उनका पूरा जीवन शिक्षा, सामाजिक समानता और नारी सशक्तिकरण के लिए संघर्ष की मिसाल है। रूढ़िवादी समाज में उन्हें पत्थरबाजी, अपमान और विरोध का सामना करना पड़ा, लेकिन उन्होंने कभी हार नहीं मानी। उन्होंने बताया कि सावित्रीबाई फुले ने अपने पति महात्मा ज्योतिबा फुले के साथ मिलकर भारत का पहला बालिका विद्यालय स्थापित किया। इसके साथ ही विधवाओं के लिए आश्रम खोले और दलितों के लिए कुएं खुलवाकर सामाजिक भेदभाव के खिलाफ मजबूत आवाज उठाई। साहित्य के क्षेत्र में भी उनका योगदान उल्लेखनीय रहा, जिसमें काव्य फुले जैसी रचनाएं शामिल हैं। इस मौके पर महिपाल, शमशेर, रविंद्र, बलवान, विजय कुमार, जगसीर, सुनीता, अनीता, बिमला, कमल, अनीता, सुमन, राजबाला, सीमा, संजू आदि मौजूद रहे।

सावित्रीबाई फुले जयंती श्रद्धा से मनाई गई

बाढड़ा। गांव बाढड़ा की धानक चौपाल में सावित्रीबाई फुले की जयंती श्रद्धा और उत्साह के साथ मनाई गई। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में बलवान सिंह आर्य, प्रदेशाध्यक्ष धर्म सेना व जिला उपाध्यक्ष भाजपा ने शिरकत की। कार्यक्रम के दौरान वक्ताओं ने सावित्रीबाई फुले के जीवन, उनके संघर्षों और समाज सुधार के लिए किए गए ऐतिहासिक कार्यों पर विस्तार से प्रकाश डाला। वक्ताओं ने कहा कि सावित्रीबाई फुले ने महिलाओं की शिक्षा और सामाजिक समानता के लिए जो संघर्ष किया, वह आज भी समाज के लिए प्रेरणास्रोत है। इस अवसर पर जिला चरखी दादरी समिति के प्रधान दयानंद, सचिव मास्टर अनिल मोरवाल, मास्टर सतीश (श्याम कलां), मास्टर अनिल खंगवाल, मास्टर सतीश (कलुवाला), डॉ. धर्मवीर खंगवाल सहित अनेक गणमान्य लोग उपस्थित रहे। वहीं संत कबीर युवा शिक्षा समिति, बाढड़ा के प्रधान संजय कुमार एवं सचिव सुनील कुमार ने भी कार्यक्रम में भाग लिया। कार्यक्रम के अंत में आयोजक संस्था की ओर से सभी अतिथियों व उपस्थितजनों का आभार व्यक्त किया गया।

फुले की जयंती पर दुल्हेड़ी में श्रद्धांजलि कार्यक्रम

तोशाम। क्षेत्र के गांव दुल्हेड़ी में सावित्रीबाई फुले की जयंती श्रद्धा और सम्मान के साथ मनाई गई। इस अवसर पर ग्रामीणों ने उनके चित्र पर पुष्प अर्पित कर नमन किया। कार्यक्रम के दौरान उपस्थित ग्रामीणों को संबोधित करते हुए एडवोकेट राजेंद्र सैनी एवं रवि सैनी ने सावित्रीबाई फुले के जीवन संघर्ष, नारी शिक्षा और सामाजिक समानता के लिए किए गए कार्यों पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि सावित्रीबाई फुले का जीवन हमें विपरीत परिस्थितियों में भी शिक्षा, समानता और सामाजिक सुधार के मार्ग पर दृढ़ता से चलने की प्रेरणा देता है। वक्ताओं ने उपस्थित लोगों से उनके बताए मार्ग पर चलकर समाज में शिक्षा और जागरूकता फैलाने का आह्वान किया। इस मौके पर कृष्ण सैनी, ईश्वर सैनी, दीपक सैनी, संजय कहानोरिया, दलबीर, सतीश, चन्दन, धर्मपाल सैनी, वीरेंद्र गुजारनी, नरेंद्र राजपूत, कृष्ण कटारिया आदि सहित अनेक ग्रामीण मौजूद थे।

एनएसएस शिविर से होता छात्रों के उज्ज्वल चरित्र का निर्माणः प्राचार्य विनोद

स्वयंसेवकों ने समाज में जागरूकता फैलाने को निकाली रैली

अनुशासन का पाठ व समाजसेवा के विभिन्न आयामों से रूबरू हुईं छात्राएं

हरिभूमि न्यूज ▶▶ भिवानी

गांव पुर स्थित राजकीय कन्या वमा विद्यालय में आयोजित सात दिवसीय राष्ट्रीय सेवा योजना शिविर का शनिवार को समापन हुआ। 27 दिसंबर से शुरू हुए शिविर में छात्राओं ने न केवल अनुशासन का पाठ सीखा, बल्कि समाजसेवा के विभिन्न आयामों से भी रूबरू हुईं। शिविर के समापन पर स्वयंसेविकाओं ने बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ जागरूकता, नशा सहित अन्य सामाजिक बुराईयों के खिलाफ जागरूकता रैली निकाली। बता दें कि शिविर का शुभारंभ 27 दिसंबर को गांव की सरपंच सुमन देवी ने किया था। शिविर के समापन पर सरपंच प्रतिनिधि अजय सनसनवाल ने स्वयंसेविकाओं को सम्मानित किया। प्राचार्य विनोद शर्मा ने छात्राओं को प्रोत्साहित करते हुए कहा कि एनएसएस का मुख्य उद्देश्य बच्चों में राष्ट्र निर्माण की भावना जागृत करना है। एनएसएस कार्यक्रम अधिकारी सुनीता ने विस्तार से बताया कि ऐसे शिविरों से विद्यार्थियों के उज्ज्वल चरित्र का निर्माण होता है और उनमें आत्मविश्वास की वृद्धि होती है।

भिवानी। जागरूकता रैली निकालते स्वयंसेवक। फोटो : हरिभूमि

उन्होंने बताया कि सात दिनों तक जारी एनएसएस शिविर में छात्राओं ने विभिन्न रचनात्मक एवं सामाजिक गतिविधियों में बढ़-चढ़कर भाग लिया, जिनमें मुख्य रूप से मेहंदी प्रतियोगिता और पेंटिंग में छात्राओं ने अपनी कलात्मक प्रतिभा का प्रदर्शन किया। इसके अलावा समाज को विभिन्न मुद्दों पर जागरूक करने के लिए जागरूकता रैलियां भी निकाली गईं। शिविर में बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ, स्वच्छ भारत अभियान, साइबर क्राइम और सडक़ सुरक्षा, नशा मुक्त भारत, डिजिटल भारत, पर्यावरण संरक्षण, प्लास्टिक मुक्त हरियाणा आदि गतिविधियों का आयोजन किया। शिविर के शुभारंभ पर सरपंच सुमन देवी के साथ प्राचार्य विनोद शर्मा, प्रवक्ता इन्दु रानी, जोगिन्द्र पाल, सुरेन्द्र पाल, डीपीई जगबीर सिहाग, कौशल्या देवी, पूनम रानी, अशोक, गुरनाम, मंजीत, सुनीता क्लर्क, माया देवी, चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी धमेन्द्र व श्याम सुंदर ने अपनी उपस्थिति दर्ज करवाई।

शिविर में 27 यूनिट रक्त एकत्र

- जरूरतमंद की जान बचाने को रक्तदान करना सबसे बड़ी मानवसेवा : जगदीश

हरिभूमि न्यूज ▶▶ भिवानी

जन्मदिन को केक काटकर या उत्सव मनाकर ही नहीं, बल्कि दूसरों को जीवनदान देकर भी यादगार बनाया जा सकता है। इसी प्रेरक सोच के साथ शनिवार को सहारा चैरिटेबल ट्रस्ट के अध्यक्ष जगदीश मिताथल और वेलनेस कोच सीमा के जन्मदिन के उपलक्ष्य में रक्तदान शिविर का आयोजन किया। शिविर फ्रीडम ब्लड बैंक में वंशिका फाउंडेशन के सहयोग से लगाया गया, जिसकी देखरेख क्षेत्र के शतकवीर रक्तदाता राजेश डुडेजा और रक्तवीर मनीष वर्मा ने की। शिविर में युवाओं और महिलाओं ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया और मानवता के प्रति अपना कर्तव्य निभाया। इस दौरान 27 युवाओं ने रक्तदान किया, जिन्हें बैज लगाकर व प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया। ट्रस्ट के अध्यक्ष जगदीश मिताथल व कोच सीमा ने स्वयं भी रक्तदान किया। उन्होंने रक्त के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि जन्मदिन ईश्वर का उपहार है और इसे किसी जरूरतमंद की जान बचाकर मनाना सबसे बड़ी खुशी है। उनका लक्ष्य समाज में संदेश देना है कि आपके द्वारा दान की गई एक यूनिट रक्त की बूंद किसी परिवार का चिराग बुझने से बचा सकती है। शतकवीर रक्तदाता राजेश डुडेजा ने बताया कि रक्तदान से न केवल मरीज की जान बचती है।

भिवानी। रक्तदाताओं को बैज लगाकर सम्मानित करते अतिथि।

हरिभूमि
रविवार भारती
haribhoomi.com
छत्तीसगढ़, दिल्ली, हरियाणा और मध्यप्रदेश से एक साथ प्रकाशित
रोहतक,रविवार 4 जनवरी 2026

बीते गुरुवार ही नया वर्ष 2026 आरंभ हुआ है। हम सभी की इस बात को लेकर बहुत उत्सुकता है कि इस साल विभिन्न क्षेत्रों में क्या कुछ नया होने वाला है? हमारी लाइफस्टाइल में क्या बदलाव देखने को मिलेंगे? यहां विस्तार से बताया जा रहा है कि इस साल हमारे डेली रूटीन, वर्क कल्चर, डाइट हैबिट, हेल्थ अवेयरनेस और टेक्नोलाइफ में क्या नया होने वाला है?

कवर स्टोरी

संध्या सिंह

इस साल हमारी लाइफस्टाइल होगी हेल्दी-बैलेंस्ड-टेंशनफ्री

साल 2026 की लाइफस्टाइल में जीवन जीने के तरीके में गहरे बदलाव साफतौर पर देखने को मिलेंगे। ये बदलाव सिर्फ सतही फैशन या ट्रेंड के स्तर पर नहीं होंगे बल्कि हमारी सोच, प्राथमिकताओं और जीवन दर्शन के स्तर पर भी दिखेंगे। एक वाक्य में कहा जाए, तो साल 2026 तेज रफ्तार जीवनशैली का नहीं बल्कि संतुलित जीवनशैली का साल होने जा रहा है। आइए क्रमबद्ध ढंग से देखें कि ये बदलाव किस तरह के होंगे।

'ज्यादा' नहीं 'जरूरी' पर होगा फोकस

इस साल लोग ज्यादा चीजों और उपलब्धियों की तरफ न भागकर, जीवन में जरूरी यानी वास्तविक जरूरतों की तरफ फोकस करेंगे। व्यावहारिक तौर पर यह जीवनशैली हमें कम सामान, कम दिखावा और कम चीजों में खुश रहना सिखाएगी। हालांकि इसकी वजह सिर्फ सोच में परिवर्तन नहीं है। इस तरफ बढ़ने की और भी कई वजहें हैं। मसलन, बेतहाशा बढ़ती महंगाई का दबाव, जलवायु संकट, मानसिक थकान और अनिश्चित भविष्य। लब्बोलुआब यह कि इस साल मिनिमलिज्म को अधिकतर लोग अपनाएंगे। लेकिन ऐसा करना मजबूरी नहीं, हमारी समझदारी की वजह से भी होगी।

हेल्थ के प्रति बढ़ेगी अवेयरनेस

कई आंकड़े बताते हैं कि भारतीय लोग, दुनिया में सबसे ज्यादा दवाएं खाते हैं। एंटीबायोटिक दवाएं खाने को तो बहुत सामान्य माना जाने लगा है। दरअसल, हम में से अधिकतर लोग स्वास्थ्य के प्रति सजग नहीं बल्कि ज्यादा चिंतित रहते हैं। लेकिन इस साल हमारी इस सोच में भी बदलाव देखने को मिलेगा। इस साल भारतीय अपने स्वास्थ्य के लिए दवा से ज्यादा दिनचर्या के बदलाव पर जोर देंगे। अच्छी नींद, तनाव से मुक्ति, बेहतर भोजन और भावनात्मक संतुलन पर इस साल हम भारतीय पिछले किसी साल के मुकाबले ज्यादा सहज और सजग रहेंगे, क्योंकि हमारी लाइफस्टाइल में जो तेजी और मारामारी बीते वर्षों में शामिल हुई है, उसके चलते 30 से 40 की उम्र में ही बड़े पैमाने पर भारतीयों में हेल्थ संबंधी समस्याएं देखने को मिल रही हैं। ज्यादातर समय चिंतित रहने के कारण आज 30 से 40 की उम्र में ही बहुत बड़े पैमाने पर भारतीय लोग लाइफस्टाइल डिजीज से पीड़ित हो रहे हैं। कोविड के बाद भारतीयों में बीमारी के प्रति डर और स्वास्थ्य के प्रति चेतना में बढ़ोत्तरी हुई है, जिसका परिणाम यह हुआ है कि अब लोग आयुर्वेद और वेलनेस की ओर आकर्षित हो रहे हैं। यानी पिछले वर्षों में लोगों में रेग्युलर हेल्थ चेकअप, कंसल्टेशन और डाइट कॉन्शसनेस बढ़ी है, उसमें इस साल और इजाफा होगा।

कामयाबी की बदलेगी परिभाषा

आज की तारीख में हम अच्छी नौकरी और ज्यादा से ज्यादा कमाई को अपनी सफलता का पैमाना मानते हैं। लेकिन इस साल हमारी यह सोच भी थोड़ी बदलेगी। इस साल हम कामयाबी यानी अच्छी नौकरी और ज्यादा पैसे के मुकाबले मानसिक शांति को ज्यादा महत्वपूर्ण समझेंगे। इस साल हम समय की कीमत को, कमाई से ज्यादा महत्व देने वाले हैं और फैशन या दिखावे की तुलना में स्वास्थ्य के प्रति सजगता बढ़ेगी। मतलब साफ है कि इस साल हम अर्थपूर्ण ढंग से काम करेंगे और इसकी वजह यह होगी कि एआई और ऑटोमेशन ने नौकरी की स्थिरता पर प्रश्नचिन्ह लगा दिया है। कोई भी सुरक्षित नहीं है। एआई के इस युग में किसी की भी नौकरी अचानक जा सकती है। युवा पीढ़ी ने पिछले कुछ सालों में महसूस किया है कि सब कुछ पाने के बाद भी एक खालीपन बना रहता है। इसलिए सब कुछ पाना अब कामयाबी की आखिरी परिभाषा नहीं होगी। जरूरत भर की इनकम में भी अपनों के साथ और प्रकृति के करीब जीवन गुजारने की दिशा में हम आगे बढ़ेंगे।

बदलेगा वर्क कल्चर

वर्क कल्चर की दिशा में इस साल सबसे ज्यादा बदलाव देखने को मिलेगा। अब हमारे रूटीन जीवन पर हमारा प्रोफेशनल वर्क हावी नहीं रहेगा। अब जीवन पर काम का इतना दबाव नहीं होगा कि सिर्फ काम ही काम जिंदगी की प्राथमिकता रहे। अब काम और जीवन में एक व्यापक और समानुपातिक बदलाव देखने को मिलेगा। इस साल जो ट्रेंड सबसे ज्यादा दिखने वाले हैं, उनका रिश्ता भी जीवन और काम से सीधे-सीधे जुड़ता है। मसलन, हाइब्रिड जॉब कल्चर। इस साल सबसे ज्यादा हाइब्रिड जॉब कल्चर के प्रति यंगस्टर्स का झुकाव देखने को मिलेगा। फ्रीलांस वर्क अब नए सिरे से प्रतिष्ठित हो रही गतिविधि है। पहले इसे लोग मजबूरी समझते थे लेकिन अब इसे अपने मन की मर्जी और और पसंद समझा जाने लगा है। इस साल अपनी इच्छा से करियर में ब्रेक को सामाजिक स्वीकृति मिलेगी। अब तक करियर ब्रेक को असफलता के रूप में दर्ज किया जाता था। और इस साल जो देश में लाइफस्टाइल के क्षेत्र में व्यापक बदलाव देखने को मिलेंगे, वह सबसे ज्यादा जीवंत इस तथ्य से होगा कि अब हाई प्रोफेशनल पहचान वाले लोग सिर्फ मेट्रोज में ही नहीं बल्कि छोटे शहरों और दक्षिण भारत के तो गांवों में भी मिलेंगे।

टेक्नोलॉजी का बैलेंस्ड इस्तेमाल

हाल के सालों में टेक्नोलॉजी ने जिस तरह से हर खास और आम लोगों के जीवन में दखल बढ़ाया है, उसके कुछ साइड इफेक्ट्स भी दिखते रहे हैं। अच्छी बात है कि लोगों में इसके प्रति भी अवेयरनेस बढ़ी है। अब टेक्नोलॉजी से लोगों का एडिक्शन कम होना शुरू हो गया है। इस साल अनुमान है कि भारतीय लोग बीते कुछ सालों के मुकाबले कम फोन करेंगे और सोशल मीडिया पर भी कम से कम समय जाया होने देंगे। सोशल मीडिया से दूरी इस साल काफी ज्यादा बढ़ेगी और डिजिटल डिटॉक्स हमारी रोजमर्रा की जिंदगी का सबसे जरूरी और सहज ढंग बन जाएगा। वास्तव में इस बदलाव का प्रमुख कारण होगा बड़े पैमाने पर भारतीयों में डिजिटल थकान बढ़ने लगी है और आपा-धापी में मन और तन दोनो की एकाग्रता में भारी कमी आई है। इसलिए इस साल बड़े पैमाने पर भारतीय लोग डिजिटल थकान से बचने पर ध्यान देंगे और रिश्तों में बढ़ रही दूरियों को कम करने की कोशिश करेंगे।

इसी तरह इस साल हमें अपने लाइफस्टाइल में रिश्तों की एक नई संस्कृति, खान-पान में स्वास्थ्य के प्रति चेतनता बढ़ी हुई दिखेगी। हर समय काम में डूबे रहने की जगह अपनी रुचि, अपने परिवार और हेल्थ के लिए भी समय निकालेंगे। निश्चित ही ये बदलाव हम सभी के जीवन में सकारात्मक दिशा में बढ़ने में मददगार साबित होंगे। *

साइंस-टेक्नोलॉजी के क्षेत्र में इस वर्ष खुलेंगे नए आयाम

नया वर्ष 2026 भारत के लिए विज्ञान, तकनीक, रक्षा, पर्यावरण और कृषि क्षेत्रों में प्रगति और चुनौतियों के साथ परिवर्तनकारी संभावनाओं को लेकर आया है। इस साल साइंस और टेक्नोलॉजी में किस तरह के बदलाव दिखेंगे, क्या कुछ दिखेगा नया और अभूतपूर्व, आगामी दिनों की संभावनाओं पर एक नजर।

साइंस-टेक 2026

संजय श्रीवास्तव

नया साल भारत के विज्ञान, तकनीक, रक्षा, पर्यावरण और कृषि क्षेत्र में अभूतपूर्व संभावनाओं को लेकर आया है। अगर सही नीति के तहत निश्चित कार्य योजना बनाकर आगे बढ़ा गया तो देश का 2030 तक 7 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था और वैश्विक टॉप श्री सुपरपावर्स में शामिल होने का सपना जरूर पूरा होगा। बेशक, इस मार्ग में चुनौतियां कम नहीं हैं, पर हम इस वर्ष से सस्ते हरित ऊर्जा, तेज इंटरनेट, सुरक्षित साइबर स्पेस, रक्षा आत्मनिर्भरता से मजबूत होती सुरक्षा, पर्यावरण सुधार, शुद्ध पेयजल के साथ समृद्ध कृषि की आशा रख सकते हैं। सरकार, उद्योग और नागरिकों का समेकित प्रयास इस लक्ष्य का मार्ग प्रशस्त करेगा।

डीपटेक में होगी प्रगतिः इस साल डीपटेक सबसे बड़ी संभावना वाला क्षेत्र बनकर उभरेगा। अनुमान है कि आने वाले समय में एक लाख स्टार्टअप्स में से 20 प्रतिशत डीपटेक, खासकर क्वांटम, बायोटेक पर केंद्रित होंगे। इस क्षेत्र में निवेश 2025 के 50 बिलियन डॉलर से बढ़कर 70 बिलियन डॉलर तक पहुंच सकता है। सेमीकंडक्टर मैन्युफेक्चरिंग व डिजाइन में प्रोत्साहन योजनाओं, एआई मिशन और विश्वविद्यालय-उद्योग सहयोग के विस्तार से रणनीतिक स्वायत्तता और आर्थिक मजबूती मिलेगी। सेमीकंडक्टर डिजाइन में भारत की प्रतिभा वैश्विक कंपनियों को भा रही है, सो इस साल इस क्षेत्र में घरेलू स्टार्टअप्स के उभरने की पूरी संभावना है।

नए आसमान छुएगा इसरोः इसरो बीते सालों की तरह ही इस साल भी अपनी उपलब्धियों की वजह से खबरों में छाया रहेगा। स्वदेशी इलेक्ट्रिक प्रोपल्शन प्रणाली के प्रदर्शन, इंडो-मॉरीशस संयुक्त उपग्रह और ध्रुव स्पेस का लीप-2 उपग्रह भेजने के साथ गगनयान परियोजना का पहले मानवरहित मिशन समेत तकरीबन दर्जन भर महत्वपूर्ण प्रक्षेपण उसकी कार्य सूची में हैं। इसकी कम लागत नवाचार, उपग्रह संचार और पृथ्वी-अवलोकन सेवाएं कृषि, आपदा प्रबंधन और लॉजिस्टिक्स में बड़े बदलाव लाएंगी। रडार सिस्टम, सैटेलाइट कम्युनिकेशन, प्रिसिजन इलेक्ट्रॉनिक्स और एडवांस मैपिंग तकनीक की दुनियाभर में मांग बढ़ रही है। इन सेक्टर में छोटे-छोटे स्मॉलकैप कंपनियों की बढ़ती भूमिका के तहत 2026 तक स्पेस टेक्नोलॉजी से कमाई की तस्वीर बदलेगी।

डिफेंस सेक्टर में होंगे मजबूतः डीआरडीओ और निजी उद्योग की भागीदारी रक्षा क्षेत्र में स्वदेशीकरण की गति को बढ़ाएगी तो स्वदेशी हथियार प्रणालियों, ड्रोन, एआई-डिफेंस और साइबर क्षमताओं में नई उपलब्धियां हासिल होंगी। हाइपरसोनिक हथियार, उन्नत लड़ाकू विमान, अग्नि-6 मिसाइल परीक्षण, सुखोई 30 को तेजस एमके-2 से बदलना और डीआरडीओ के एआई-संचालित ड्रोन सेल्फ अरमाडा परियोजना चर्चा में होंगे, तो आईडेक्स की फंडिंग से तकनीकी स्टार्टअप्स फलेंगे-फूलेंगे। इस बरस डीप ओशन मिशन के तहत विकसित मत्स्य 6000 पनडुब्बी, जो 6000 मीटर की गहराई तक, तीन वैज्ञानिकों को ले जाएगी। यह समुद्री संसाधन, खनिज खोज और वैज्ञानिक अनुसंधान तथा निगरानी के लिए अहम साबित होगी।

बढ़ेंगे 5जी यूजर्सः संसार के दूसरे सबसे बड़े दूरसंचार बाजार में 5जी उपभोक्ता इस वर्ष करीब 330 मिलियन हो जाएंगे। सैटेलाइट इंटरनेट से संचार क्षेत्र में आई क्रांति का एजुकेशन, टेलीमेडिसिन, ग्रामीण कनेक्टिविटी पर प्रभाव दिखेगा। 2026 में भारतनेट के विस्तार से जब गांवों में 100 एमबीपीएस स्पीड वाली कनेक्टिविटी 50 फीसदी तक पहुंचेगी, डिजिटल साक्षरता अभियान के तहत 5 लाख डिजिटल साक्षरता केंद्र खुलेंगे। 6जी पर अनुसंधान भी तेज होगा, इसका असर 2026 में पायलट टेस्ट, पेटेंट और वैश्विक साझेदारियों के रूप में दिखेगा।

ग्रीन एनर्जी का बढ़ेगा यूजः इस साल ग्रीन एनर्जी की फील्ड में स्टार्टअप्स नई उम्मीदें जगाएंगे। ग्रीन हाइड्रोजन मिशन के तहत 5 मिलियन टन उत्पादन लक्ष्य से ऊर्जा स्वायत्तता मिलेगी। लाइफ मिशन से वन कवर 33 प्रतिशत के करीब पहुंच सकता है। पर्यावरण में हरित हाइड्रोजन, ईवी बैटरी रीसाइक्लिंग और प्रदूषण-नियंत्रण तकनीक शहरों के लिए जीवनरेखा बन सकती हैं। सरकार ऊर्जा-कुशल चिप्स, सस्टेनेबल क्लाउड और एआई-संचालित जलवायु समाधानों में निवेश बढ़ाएगी। प्रदूषण नियंत्रण, हरित ऊर्जा, इलेक्ट्रिक मोबिलिटी और जल संरक्षण पर नई योजनाओं की उम्मीद है। पर्यावरण में कार्बन क्रेडिट ट्रेडिंग एक्सचेंज शुरू होगा और कृषि में 'रीइमेजिनिंग एग्रीकल्चर' रोडमैप। कृषि में एग्री-टेक, एआई डिजिटल ट्विन्स, ड्रोन स्प्रे, सेंसर, प्रिसिजन फार्मिंग, जलवायु-प्रतिरोधी बीजों से उत्पादकता 20 प्रतिशत बढ़ेगी तो किसानों की आय भी बढ़ेगी। *

दोहे

गोविंद भारद्वाज

मिलते पुष्पाहार

धन-दौलत के मोह से, दूर रहो सब यार।
शुद्ध भाव से नित करो, अपना सब व्यापार।।

गीता पढ़ना ज्ञान की, होगा जीवन पार।
फिर जीत मिलेगी सदा, दूर रहेगी हार।।

देश निकाला दीजिए, आए सीमा पार।
फूल नहीं वो देश के, बने हुए हैं खार।।

बात करो बस प्यार से, नेक रहे व्यवहार।
मेल मिलाप रहे सदा, जीवन का आधार।।

सत्य-अहिंसा से मिले, जीव-जगत को प्यार।
सन्मार्ग पर यदि चलें, सुखी रहे संसार।।

सत्य वचन पर हों अडिग, झुक जाएं हथियार।
तोप-तमंचे फेल फिर, मिलते पुष्पाहार।।

लघुकथाएं

पेट का स्वाभिमान

अपनी थाली देखकर रम्मू ने पत्नी रमिया से पूछा, 'रोटियां तो पांच ही हैं, तो तुम इतनी बड़ी थाली में क्यों परोसती हो?'

'थाली बड़ी नहीं है, रोटियां छोटी हो गई हैं। महंगाई बढ़ती जा रही है पर आमदनी नहीं। ऐसे में रोटी तो छोटी होती ही जाएगी।' रमिया ने मायूस होकर कहा।

'मेरे पास इस समस्या का एक हल है। कल से छोटी थाली में रोटी परोसना।' रम्मू ने सुझाव दिया।

'तुम्हें छोटी थाली में परोस तो दूंगी, लेकिन समस्या यह है कि हमारे पास दो ही थालियां हैं। तुम्हारी जूठी थाली में मैं खा लेती हूं। छोटू अपनी थाली में खाता है। वह तो इतनी छोटी है कि उसमें तुम्हारी ये रोटियां भी नहीं आ सकती हैं।' रमिया ने बताया।

'तो हमें सोचना पड़ेगा कि ऐसा क्या करें, जिससे हमारी रोटियां बड़ी हो सकें।'

रम्मू और रमिया लेटे-लेटे इस गंभीर समस्या पर विचार करते रहे। रात भर उनके दिमाग में रोटियां घूमती रहीं। सुबह-सुबह आंख लगी तो दोनों ने एक ही सपना देखा। कोई उन्हें बड़ी-बड़ी रोटियां दे रहा है, किंतु फेंक-फेंककर।

दोनों हड़बड़ाकर उठ बैठे। एक-दूसरे को अपने सपने के बारे में बताया। फिर दोनों ने एक राय से निश्चय किया। 'हम भीख किसी भी स्थिति में नहीं मांगेंगे। पेट का भी स्वाभिमान होता है। रोटियां बड़ी करनी हैं तो अब हम दोनों ज्यादा से ज्यादा मेहनत करेंगे।' *

-बालकृष्ण गुप्ता 'गुरु'

सच्ची साधना

काफी पुरानी बात है। किसी वन में स्थित एक आश्रम में एक गुरु अपने दो शिष्य मोहनदास और चैतन्यदास के साथ रहते और साधना करते थे। मोहनदास स्वभाव से अहंकारी था, इसलिए गुरुजी को हमेशा अपनी साधना को सच्ची बताया करता था। चैतन्यदास, मोहनदास की बातों पर ध्यान न देते हुए अपनी साधना में लीन रहता था।

एक दिन गुरुजी ने मोहनदास का अहंकार दूर करने की सोची। उन्होंने दोनों शिष्यों को बुलाकर कहा, 'जाओ घने जंगल में जाकर कुछ दिन एकांत में साधना करो। मैं स्वयं आकर देखूंगा कि किस शिष्य की साधना सच्ची है?'

दोनों शिष्य घने जंगल में पहुंचे। अत्यंत सर्द मौसम था। ठंड से बचने के लिए दोनों ने अलाव जलाया और उसके निकट ही बैठकर साधना करने लगे। कुछ ही देर में अचानक 'बचाओ..बचाओ..' की आवाज सुनाई पड़ी। यह सुनकर चैतन्यदास अलाव में से एक जलती लकड़ी लेकर आवाज आने की दिशा में दौड़ा। उसने देखा कि एक भालू किसी बुजुर्ग महिला पर हमला करने वाला है। चैतन्यदास ने जलती लकड़ी से भालू को भगाया और महिला का जीवन बचा लिया। उसने पूछा, 'मां आप इतनी ठंड में घने जंगल में क्या कर रही हैं?'

'बेटा, मैं कई वर्षों से इस जंगल से लकड़ी बीन कर अपने घर की रसोई में खाना बनाती हूं। आज न जाने यह भालू कहां से आ गया?' महिला ने बताया।

'मां, पहाड़ी पर बर्फबारी होने के कारण भालू नीचे जंगल में आ गया होगा। आगे आप संभलकर ही इस घने जंगल में आना। चलिए, आपको मैं घर तक छोड़ देता हूं।' चैतन्यदास बोला।

उधर गुरुजी साधना स्थल पर पहुंचे और पूछा, 'अरे! मोहनदास, चैतन्यदास कहां चला गया?'

'गुरुजी, मैं यहां हूं।' कहते हुए चैतन्यदास गुरुजी के पास पहुंचा। उसे देखकर मोहनदास बोला, 'अब तो आपको समझ में आ ही गया होगा कि चैतन्यदास तो साधना छोड़कर कहीं चला गया लेकिन मैं कहीं नहीं गया। इसलिए मेरी साधना ही सच्ची है।' गुरुजी ने चैतन्यदास से पूछा, 'तुम कहां गए थे?' चैतन्यदास ने पूरी घटना के बारे में बता दिया। इस पर मोहनदास ने पूछा, 'अब आप ही बताइए गुरुजी, किसकी साधना सच्ची है?'

गुरुजी ने कहा, 'सच्ची साधना वही होती है, जिसमें मानवता हो। तपस्या तो बाद में भी की जा सकती है, लेकिन किसी का जीवन बचाना ही सच्ची साधना है। इसलिए चैतन्यदास की साधना ही सच्ची साधना है।'

यह सुनकर मोहनदास का सिर शर्म से झुक गया। *

-चंद्रप्रकाश डाले

पत्रिका चर्चा / विज्ञान भूषण

शताब्दी स्मरण : अमरकांत

कुछ समय पूर्व प्रसिद्ध साहित्यकार अमरकांत के जन्मशती के अवसर पर 'बनास जन' का 'शताब्दी स्मरण : अमरकांत' विशेषांक छपकर आया है। इसमें अमरकांत की बहुआयामी साहित्यिक छवियों पर विस्तार से चर्चा की गई है। इस समृद्ध अंक के अलग-अलग खंडों में उनके विभिन्न साहित्यिक पक्षों पर प्रकाश डाला गया है।

'स्मृतियों में अमरकांत' खंड में ममता कालिया, हरीश पांडे और मनोज कुमार पांडे ने उनसे जुड़ी स्मृतियों को मार्मिकता से संजोया है।

'लेखकों के लेखक' शीर्षक संस्मरणात्मक लेख में ममता कालिया ने कुछ प्रसंगों के जरिए अमरकांत जी के स्वाभिमानी रचनाकार की छवि को प्रकट किया है। प्रेमचंद के बारे में अप्रिय टिप्पणी करने पर अमरकांत जी, 'मनोरमा' के मालिक-संपादक आलोक मित्र से यह कहने से नहीं हिचके, 'प्रेमचंद सर्वहारा के पक्षधर रचनाकार थे। आप लोग भूख और गरीबी बेचते हैं। प्रेमचंद ऐसे विक्रेता नहीं थे।' जबकि उन दिनों वे उसी पत्रिका में संयुक्त संपादक के पद पर कार्य कर रहे थे।

'कुछ पते कुछ चिट्ठियां' खंड में अमरकांत जी द्वारा लिखे गए कुछ पत्रों को संकलित किया गया है। इन्हें पढ़ते हुए उनके भीतर मौजूद एक अत्यंत भावुक रचनाकार की छवि प्रकट होती है। यहां अमरकांत जी के सभी उपन्यासों और कथा संग्रहों पर कई समीक्षकों के विवेचनात्मक लेख भी पढ़े जा सकते हैं। इनसे गुजरते हुए अमरकांत जी की कथादृष्टि का विस्तार और मानवीय संवेदना की गहनता को महसूस किया जा सकता है। उनके कथा संग्रह 'कुहासा' पर उमाशंकर चौधरी की यह टिप्पणी देखी जा सकती है, जिसमें वह कहते हैं, 'अमरकांत के यहां पात्रों के संघर्ष का विश्वसनीय चित्रण है। वे अपने समय की समस्याओं को भी पकड़ते हैं और विडंबनाओं को भी।' कहने की जरूरत नहीं कि यह अंक पठनीय ही नहीं संग्रहणीय भी है। *

पत्रिका : बनास जन-82 (शताब्दी स्मरण : अमरकांत), संपादकः पल्लव, मूल्यः 200 रुपए

इंडोनेशिया

अगर आपको पर्यटन का शौक है और आप देश-विदेश के चुनिंदा लोकेशंस को एक्सप्लोर करना चाहते हैं, तो आपको अलग-अलग देशों में स्थित इन पांच टूरिस्ट प्लेसेस की सैर जरूर करनी चाहिए। इन विश्व प्रसिद्ध टूरिस्ट डेस्टिनेशंस की खासियतों को खुद के अनुभव से लेखक साझा कर रहे हैं अपनी जुबानी।

टूरिज्म
समीर चौधरी

5 फैमिली के संग घूम आइए अमेजिंग टूरिस्ट डेस्टिनेशंस

अब तक मैं 125 से अधिक देशों की यात्रा कर चुका हूं और इस अनुभव से मेरा यकीन पुख्ता हुआ है कि दुनिया को समझने का सबसे विश्वसनीय रास्ता पर्यटन ही है। अपने तजुर्बे की रोशनी में मेरा सुझाव है कि अगर आप इस साल विदेश यात्रा की योजना बना रहे हैं तो इन पांच टूरिस्ट प्लेसेस को प्राथमिकता दे सकते हैं, क्योंकि इन स्थलों पर प्रकृति, संस्कृति और परिवर्तनीय अनुभवों को वास्तव में महसूस किया जा सकता है।

दक्षिण अफ्रीका में क्रुगर नेशनल पार्क

मेट्रोपोलिटन म्यूजियम ऑफ आर्ट

फिजी

फिनिक्स पार्क डबलिन सिटी सेंटर

इंडोनेशिया मिलेंगे विविधरंगी अनुभवः इंडोनेशिया दुनिया के उन देशों में शामिल है, जिनमें आकर्षण व दिलचस्पी का हर रंग देखने को मिल जाता है। यहां बोर्नियो में ओरंगुटान को उनके प्राकृतिक स्थलों में देखने के बाद आपको वन्यजीव संरक्षण के वास्तविक महत्व का एहसास होगा। फ्लोर्स में सक्रिय ज्वालामुखी, परंपरागत गांव और अविश्वसनीय नीले सागर एक विशिष्ट सांस्कृतिक और प्राकृतिक यात्रा का अनुभव कराते हैं। पश्चिम में लोंबोक में आपको मिलेंगे रिंजानी जैसे ज्वालामुखी, शासक संस्कृति, सुंदर झरने और शांत समुद्री तट, जहां बाली की तरह पर्यटकों की भीड़ नहीं होगी और पास में ही गिल द्वीप (विशेषकर गिल एयर और गिल मेनो) में साफ-स्वच्छ जल, सी टर्टल और आरामदायक वातावरण का जन्नत है, जो दक्षिणपूर्व एशिया में अब लगभग लुप्त हो चुका है। इंडोनेशिया में आप विशेष रूप से तनजुंग पुटिंग, केलिमुतु, कोमोडो, रिंजानी, तिउ केलेप, सेंदांग गिले, गिल एयर और गिल मेनो को जरूर देखें। लोंबोक और गिल जाने के लिए सबसे अच्छा समय मई से अक्टूबर है, जबकि बोर्नियो और फ्लोर्स के लिए जून से सितंबर। आपको इंडोनेशिया इसलिए भी जाना चाहिए क्योंकि यहां आपको जीवित संस्कृति, ज्वालामुखी, स्वप्निल समुद्री तटों और संसार में कुछ सबसे विशेष अनुभवों का संगम देखने को मिलेगा।

दक्षिण अफ्रीका दिखेगा वाइल्डलाइफ का बेहतरीन नजाराः दक्षिण अफ्रीका में विश्व प्रसिद्ध क्रुगर नेशनल पार्क तो देखने के लिए है ही। इसके अलावा भी बहुत कुछ देखने के लिए वहां है। एक अलग मार्ग केपटाउन में आरंभ होता है और फिर स्टेल्लनबोश व फ्रांसचोक के अंगूरों के खेतों से होता हुआ समारा और ग्रेट कारु तक जाता है। फिर वहां से आप किंबर्ले के लिए फ्लाइट ले सकते हैं और कालाहारी जा सकते हैं। वहां शानदार सफारी का आनंद भी आप उठा सकते हैं। 'वर्किंग विद वाइल्डलाइफ' जैसे प्रोजेक्ट इस क्षेत्र में संचालित हैं, जो विभिन्न समुदायों और जीव प्रजातियों के संरक्षण में मदद करते हैं। दक्षिण अफ्रीका में पर्यटन के लिए सबसे अच्छा समय मई से सितंबर तक है और विशेष रूप से आपको समारा, कारु नेशनल पार्क, केप वाइनयार्ड्स और कालाहारी देखने चाहिए।

फिजी आकर्षक सांस्कृतिक विविधता का देशः अपनी मेहमाननवाजी, शुद्ध प्राकृतिक वातावरण और सांस्कृतिक विविधता के लिए मशहूर फिजी की यात्रा आपके लिए निश्चित तौर पर यादगार अनुभवों से भरी होगी। यहां के अंदरूनी गांवों में खासतौर से मिलने वाले कावा (एक विशेष प्रकार का पेय) का स्वाद और अनुभव फिजी आने वाले पर्यटक जरूर लेते हैं। कावा एक अनोखा पेय होने के साथ-साथ फिजी के समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का प्रतीक-सा बन गया है। फिजी की यात्रा के लिए सबसे अच्छा समय मई से अक्टूबर तक माना जाता है। फिजी यात्रा के दौरान आपको यसावा, विती लेवु व मोनुरिकी अवश्य देखना चाहिए। फिजी आपको इसलिए भी जाना चाहिए क्योंकि इसके आकर्षक सी बीच, आपको यहां की अति सुंदर संस्कृति से जोड़ते हैं।

न्यूयॉर्क सिटी अमेजिंग सेंट्रल पार्क के लिए प्रसिद्धः अमेरिका के न्यूयॉर्क सिटी में स्थित सेंट्रल पार्क न सिर्फ दुनिया भर के सिटी पार्कों के लिए अच्छी मिसाल है बल्कि मेनहट्टन के बीच में स्थित यह स्थान अपने आपमें सेलेब्रिटी स्टेटस रखता है। पार्क का दक्षिणी हिस्सा न्यूयॉर्क सिटी और उसके रईस सबअर्ब की याद दिलाता है। उत्तरी हिस्सा अपने पहाड़ों, पेड़ों व बेंचों के कारण इस शहर के अतीत की याद दिलाता है। इस मास्टरपीस का आनंद लेने के लिए खुले मैदान में बैठें, झील के पास ब्रेक लें, स्ट्रॉबेरी खेतों के पास रुकें जो जॉन लेनन की याद में हैं या जाड़े में आइस स्केटिंग करें। जिन पर्यटकों को कला, प्रकृति और विज्ञान में दिलचस्पी है, वे मेट्रोपोलिटन म्यूजियम ऑफ आर्ट और अमेरिकन म्यूजियम ऑफ नेचुरल हिस्ट्री में जा सकते हैं, जो पार्क के बीच के हिस्से में ही स्थित हैं।

फिनिक्स पार्क शोर-शराबे से दूर नेचर के करीबः आयरलैंड के डबलिन सिटी सेंटर के निकट ही फिनिक्स पार्क स्थित है। लिफ्फेय नदी के साथ वाली सड़क पर डबलिन से पब्लिक ट्रांसपोर्ट द्वारा यहां तक पहुंचने में 20 मिनट लगते हैं। फिनिक्स पार्क आपको शोर-शराबे से बहुत दूर ले जाता है। इसकी झील के पास आपको सैकड़ों जंगली हिरण घूमते हुए मिल जाएंगे, जिनसे आपकी नजर नहीं हट सकेगी। यहां पापल क्रॉस, वेलिंगटन स्मारक और सेंट थॉमस हिल के ऊपर तारे के आकार का मैगजीन फोर्ट जैसे स्मारक भी दर्शनीय हैं। इनके अलावा एक्लेक्टिक फार्मलीग हाउस भी देखने योग्य है। *

नए साल में करिए खुद को ऐसे अपडेट

सेल्फ इंप्रूवमेंट
शिखर चंद जैन

नए साल का आगाज हो चुका है। आप जरूर सोच रहे होंगे कि इस नए साल में खुद को अपडेट करने के लिए क्या कुछ ऐसा करें, जिससे आपकी ओवरऑल पर्सनालिटी में निखार आए, आपके करियर को भी एक नया मुकाम हासिल हो। इसके लिए कुछ उपयोगी सलाह।

आपने देखा होगा कि समय-समय पर शोरूम, पत्र-पत्रिकाएं, बड़े ब्रांड्स आदि अपने कलेवर बदलते और दुरुस्त करते रहते हैं, खुद को रिन्यू करते रहते हैं। वास्तव में रीब्रांडिंग, रीन्यूअल और रेनोवेशन एक सतत प्रक्रिया है। एक व्यक्ति के रूप में भी खुद को अपडेट करते रहना चाहिए। इसकी शुरुआत अभी शुरू हुए नए साल से भी की जा सकती है।

नया माइंडसेट : हमारा दिमाग मांसपेशी की तरह होता है। इसे जितनी चुनौती, मशक्कत और वर्जिश देंगे, यह उतना ही मजबूत होगा। इसलिए इसे नयापन या स्ट्रेंथ देने के लिए ऐसी नई स्किल्स सीखें, जिससे दिमाग की कसरत होती हो। जैसे कोई नई भाषा सीखें, पब्लिक स्पीकिंग की प्रैक्टिस करें, कोडिंग या कोई नया आर्ट सीखें। रोज सुबह एक नोटबुक में लिखें कि बीते कल आपने क्या नया महसूस किया, देखा या सीखा? दिन में जब फुर्सत मिले, 5-10 मिनट का कोई ऐसा पॉडकास्ट देखें, जो किसी नए और दिलचस्प विषय पर आधारित हो।

नई बॉडी-स्ट्रेंथः आपका शरीर सतत क्रियाशील रहता है। जाहिर है, इससे ऊर्जा का क्षय होता है और शरीर में थकान व दुर्बलता भी आती है। इसलिए इसे समुचित ऊर्जा और पोषण रूपी ईंधन की जरूरत होती है। इसके लिए जरूरी है कि आप अपनी डाइट में बहुरंगी सब्जियां और फल शामिल करें, पौष्टिक अनाज, दूध, दही, दालें आदि अवश्य लें। एक्सरसाइज, वॉक, जॉगिंग, साइक्लिंग जैसी एक्टिविटीज को अपने डेली रूटीन का हिस्सा बनाएं।

नई स्किलः ज्यों-ज्यों समय बीतता है आपका शरीर ही नहीं, आपका टैलेंट, नॉलेज और स्किल भी बहुत हद तक पुराना और आउटडेटेड होने लगता है। इसलिए जरूरी है कि आप इन्हें भी समय के साथ अपडेट करते रहें। आपको इस साल कुछ ऐसी स्किल सीखनी चाहिए, जो आपकी दिलचस्पी की हों और जरूरत की भी। आने वाले समय में ग्राफिक डिजाइनिंग, स्टॉक ट्रेडिंग, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस टूल्स, कॉपीराइटिंग जैसे स्किल्स आपके लिए बहुत उपयोगी हो सकते हैं।

नए संबंधः बदलते परिदृश्य, बदलते ट्रेंड और बदलते परिवेश के हिसाब से आपको अपने आस-पास के लोगों का दायरा भी अपडेट करना पड़ता है। आज की दुनिया में सोशल कनेक्शन बहुत जरूरी है। बड़ा सोशल नेटवर्क आपको फायदा पहुंचाएगा। आपको अपनी दिलचस्पी और जरूरत के मुताबिक नए लोगों से मेल बढ़ाना चाहिए, जो आपको मोटिवेट कर सके, व्यापारिक या प्रोफेशनल लाभ पहुंचा सकें और जिनसे आप कुछ नया सीख सकें।

सेल्फ अवेयरनेसः पर्सनालिटी डेवलपमेंट के प्रमुख घटकों में से एक है सेल्फ अवेयरनेस। सेल्फ अवेयरनेस के माध्यम से आप अपने मूल्यों, कमियों और खूबियों के बारे में अधिक जान सकते हैं, जिससे आपको अधिक सार्थक लक्ष्य बनाने और बेहतर निर्णय लेने में मदद मिलेगी। यह गुण आपको उन विशेषताओं को स्वीकार करने और पूरी तरह से समझने में सक्षम बनाता है, जो आपको विशिष्ट बनाती हैं। आत्म-जागरूकता (सेल्फ अवेयरनेस) दूसरों के साथ सरस और सार्थक रिश्ते बनाने की आपकी क्षमता को भी बेहतर बनाती है।

माइंडफुलनेस का अभ्यासः ध्यान देना यानी माइंडफुलनेस सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करने की महत्वपूर्ण नीति है। ध्यान देने का अर्थ है, अपने विचारों और भावनाओं के प्रति जागरूकता बनाए रखना और वर्तमान पर ध्यान केंद्रित करना। भावनात्मक नियंत्रण में सुधार, तनाव का स्तर कम होना और फोकस की अवधि बढ़ना जैसे कई फायदे आपको माइंडफुलनेस के अभ्यास से मिलते हैं।

उपयोगी आदतेंः हर व्यक्ति की पहचान उसकी अपनी आदतों की वजह से भी बनती है। आपको कुछ ऐसी आदतें सीखनी चाहिए जो आपकी हेल्थ, पर्सनालिटी और आर्थिक रूप से भी आपको इंप्रूव करती हों। जैसे- रोजाना पर्याप्त पानी पीना, रोज किसी किताब के कम से कम पांच पेज पढ़ना, रोज सुबह जाकर 5 से 5:30 के बीच जागकर ब्रीदिंग एक्सरसाइज, वॉक आदि करना। बाजारू खाना त्याग कर घर का ताजा भोजन करना। बिजनेस न्यूज चैनल देखना और बिजनेस पत्रिकाएं पढ़कर आर्थिक मोर्चे पर खुद को नियमित अपडेट करना। आर्थिक खबरों, नई सरकारी नीतियों से रूबरू रहना। *

विशेषः विश्व ब्रेल दिवस 4 जनवरी

जानकारी
अंजू जैन

दृष्टिबाधित लोगों के जीवन में लुई ब्रेल ने नई आशा का संचार ब्रेल लिपि के जरिए किया था। क्या है ब्रेल लिपि, इसका महत्व और उद्देश्य क्या है? आज 'विश्व ब्रेल दिवस' के अवसर पर हम आपको बता रहे हैं विस्तार से।

दृष्टिबाधितों के जीवन में ब्रेल लिपि से फैला उजाला

आपने क्या कभी सोचा है कि अगर हमारी आंखों के सामने अंधेरा हो, तो हम किताबें या अपनी पसंदीदा कहानियां कैसे पढ़ेंगे? हम रंगों को कैसे पहचानेंगे या गणित के सवाल कैसे हल करेंगे? दुनिया में लाखों ऐसे लोग हैं, जो देख नहीं सकते, लेकिन वे हमारी-आपकी तरह ही पढ़ते हैं, लिखते हैं और कंप्यूटर चलाते हैं। यह सब मुमकिन होता है 'ब्रेल लिपि' की सुविधा से।

लुई ब्रेल

क्यों मनाते हैं विश्व ब्रेल दिवसः वर्ष 2019 से हर साल 4 जनवरी को विश्व ब्रेल दिवस मनाया जाता है। यह दिवस दृष्टिबाधित लोगों के लिए शिक्षा, संचार और सामाजिक समावेश के लिए ब्रेल लिपि (स्पर्शनीय लेखन प्रणाली) के महत्व के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए मनाया जाता है। इसी दिन ब्रेल लिपि के आविष्कारक लुई ब्रेल की जयंती होती है। लुई का जन्म 4 जनवरी 1809 को फ्रांस के एक छोटे से गांव में हुआ था। जब वे मात्र 3 साल के थे, तो अपने पिता की कार्यशाला में औजारों से खेलते समय उनकी आंखों में चोट लग गई और धीरे-धीरे उनकी दोनों आंखों की रोशनी चली गई। लुई पढ़ना चाहते थे, लेकिन उस समय नेत्रहीनों के लिए पढ़ाई बहुत मुश्किल थी। उन्होंने हार नहीं मानी और मात्र 15 साल की उम्र में एक ऐसी भाषा तैयार की, जिसे छूकर पढ़ा जा सकता था। उन्हीं के सम्मान में संयुक्त राष्ट्र ने 2019 से हर साल 4 जनवरी को आधिकारिक तौर पर 'विश्व ब्रेल दिवस' मनाने की शुरुआत की।

कुछ इस तरह मनाते हैं विश्व ब्रेल दिवसः इस अवसर पर स्कूलों, कॉलेजों और समुदायों में कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। जहां लोगों को ब्रेल लिपि के बारे में बताया जाता है। ब्रेल पढ़ने और लिखने की प्रतियोगिताएं होती हैं। दृष्टिबाधित लोगों और उनके परिवारों के साथ बातचीत की जाती है, ताकि उनकी समस्याओं को समझा जा सके।

क्या है ब्रेल लिपिः ब्रेल कोई भाषा नहीं, बल्कि एक 'कोड' या 'लिपि' है। इसे कागज पर उभरे हुए बिंदुओं के जरिए पढ़ा जाता है। इसमें कुल 6 बिंदु होते हैं। इन 6 बिंदुओं को अलग-अलग क्रम में सजाकर अक्षर, संख्याएं और संगीत के संकेत बनाए जाते हैं। नेत्रहीन बच्चे अपनी अंगुलियों के पोरों से इन उभरे हुए बिंदुओं को छूकर महसूस करते हैं और तेजी से पढ़ लेते हैं।

ब्रेल लिपि, दृष्टिहीनों को पढ़ने का मौका तो देती ही है, इससे उनके जीवन और उनके प्रति लोगों के नजरिए में भी व्यापक बदलाव देखने को मिलते हैं। वास्तव में संयुक्त राष्ट्र ने इस दिन यानी 'विश्व ब्रेल लिपि दिवस' की शुरुआत इसलिए की, ताकि यह याद दिलाया जा सके कि हर किसी को, चाहे वह देख सकता हो या नहीं, शिक्षा, सूचना और संचार का समान अधिकार है।

ज्ञान, स्वतंत्रता और आत्मनिर्भरताः ब्रेल लिपि दृष्टिबाधित लोगों के लिए ज्ञान का सबसे महत्वपूर्ण दरवाजा है। इसके बिना उनके लिए किताबें पढ़ना, स्कूल जाना या कंप्यूटर इस्तेमाल करना बहुत मुश्किल होता। जबकि इसके माध्यम से वे पढ़-लिखकर शिक्षक, तकनीक विशेषज्ञ, कलाकार आदि जो चाहे बन सकते हैं और समाज में कंधे से कंधा मिलाकर चल सकते हैं। ऐसे अनेक दृष्टिबाधित सफल लोगों के उदाहरण हमें देखने-सुनने को मिलते रहते हैं।

आसान हुआ दैनिक जीवनः बैंक नोटों पर उभरे हुए प्रतीकों के रूप में ब्रेल लिपि का इस्तेमाल किया जाता है। दवाइयों के लेबल पर और सार्वजनिक स्थानों पर दिशा बताने वाले संकेतों पर भी ब्रेल लिपि उभरी होती है। आजकल रेलवे टिकट पर भी कई जगह ब्रेल लिपि दी जाती है। ब्रेल लिपि के इस तरह के इस्तेमाल से दृष्टिबाधित लोगों का जीवन बहुत हद तक आसान हुआ है। दृष्टिबाधित लोगों के लिए कुछ और भी उपकरण उपलब्ध हैं, जिनसे उनको पढ़ने में सुविधा होती है।

रिफ्रेशेबल ब्रेल डिस्प्लेः ये छोटे इलेक्ट्रॉनिक डिवाइस होते हैं, जिनमें पिनों की पंक्तियां होती हैं, जो ऊपर-नीचे होकर ब्रेल के बिंदु बनाती हैं। जब आप कंप्यूटर, फोन या टैबलेट से कनेक्ट करते हैं, तो यह डिजिटल टेक्स्ट को तुरंत ब्रेल में दिखाता है, और आप एक बटन दबाकर अगली लाइन पर जा सकते हैं।

ब्रेल ई-रीडरः ये विशेष उपकरण होते हैं जो सीधे डिजिटल ब्रेल किताबें (ऑनलाइन लाइब्रेरी से डाउनलोड की गई) पढ़ सकते हैं। इनमें नोट्स लेने, कैलकुलेटर और फाइल मैनेजर जैसे इन बिल्ट फीचर्स भी हो सकते हैं, जो इन्हें पोर्टेबल बनाते हैं।

ब्रेल नोट टेकरः ये छोटे पोर्टेबल डिवाइस होते हैं जिनमें ब्रेल की-बोर्ड और डिस्प्ले होता है। ये नोट्स लेने, कैलेंडर और ईमेल जैसी सुविधाओं के साथ आते हैं और वाई-फाई के जरिए क्लाउड से जुड़ सकते हैं। *

बहुत सुविधाजनक है डिजिटल ब्रेल

डिजिटल ब्रेल, दृष्टिबाधित लोगों के लिए ब्रेल लिपि को इलेक्ट्रॉनिक रूप में पढ़ने और लिखने का एक आधुनिक तरीका है। यह रिफ्रेशेबल ब्रेल डिस्प्ले और ब्रेल ई-रीडर जैसे उपकरणों के माध्यम से संभव होता है, जो डिजिटल टेक्स्ट (जैसे कंप्यूटर, स्मार्टफोन, टैबलेट से) को पिन की मदद से उभरे हुए ब्रेल अक्षरों में बदलते हैं। इस तरह वे ऑनलाइन जानकारी, किताबें और दस्तावेज आसानी से एक्सेस कर पाते हैं और इससे उन्हें शिक्षा और अपने काम में बहुत मदद मिलती है।

सिने ट्रेंड-2026
अशोक जोशी

हालांकि बीता साल बॉलीवुड के लिए बहुत अच्छा नहीं रहा। लेकिन इस साल कई ऐसी फिल्में रिलीज होने वाली हैं, जिनसे बड़ी उम्मीदें हैं। यह देखना रोचक होगा कि इस साल कौन-कौन सी फिल्में दर्शकों की उम्मीदों पर खरी उतरेंगी।

बॉलीवुड के लिए बहुत उम्मीदों भरा है यह साल

बॉलीवुड में हर साल बड़ी संख्या में फिल्में रिलीज होती हैं। बॉक्स ऑफिस कलेक्शन के लिहाज से देखें तो रिलीज फिल्मों में से कुछ ही फिल्मों को बड़ी सफलता मिल पाती है। अब पिछले साल प्रदर्शित फिल्मों पर नजर दौड़ाएं तो 'सैयारा', 'छावा' और 'धुरंधर' जैसी कुछ फिल्में ही बॉक्स ऑफिस पर अपना दबदबा बनाने में कामयाब हो सकीं। पिछले साल रिलीज्ड और सक्सेसफुल फिल्मों के बीच बड़ा अंतर होने के बावजूद निर्माताओं को इस साल अपनी फिल्मों से अच्छे प्रदर्शन की उम्मीद है।

रिलीज होंगी बिग स्टार्स की फिल्मेंः नए साल में बिग स्टार्स की कुछ धमाकेदार फिल्मों का दर्शकों को बेसब्री से इंतजार है। सनी देओल, धर्मेंद्र दोनों अलग-अलग फिल्मों में नजर आएंगे। साथ ही प्रभास के साथ संजय दत्त भी नजर आने वाले हैं। वहीं दूसरी तरफ एक और जोड़ी है जिसकी फिल्म का दर्शकों को बेसब्री से इंतजार है और वो हैं थलापति विजय और बॉबी देओल।

साल की शुरुआत 'इक्कीस' सेः 'इक्कीस' फिल्म में धर्मेंद्र आखिरी बार नजर आए हैं। उनका बीते नवंबर निधन हो गया था। इस फिल्म में अमिताभ बच्चन के नाती अगस्त्य नंदा लीड रोल में हैं। साल के पहले ही दिन रिलीज हो चुकी इस फिल्म के प्रचार में धर्मेंद्र को हाईलाइट किया गया है। 'इक्कीस' में जयदीप अहलावत, सिकंदर खेर, विवान शाह भी नजर आ रहे हैं। फिल्म को डायरेक्ट किया है श्रीराम राघवन ने।

इन साउथ-सुपर स्टार्स की फिल्मों में होगा क्लैशः इसी सप्ताह शुक्रवार यानी 9 जनवरी को साउथ के दो बड़े सुपरस्टार्स की फिल्में रिलीज हो रही हैं। इस दिन जहां एक ओर 'बाहुबली' फेम प्रभास की 'राजा साब' रिलीज होने वाली है, जिसमें उनके साथ संजय दत्त, मालविका मोहनन, जरीना बहाव, बोमन ईरानी, निधि अग्रवाल, कियारा आडवाणी जैसे कलाकार नजर आने वाले हैं। दूसरी तरफ 9 जनवरी को ही साउथ के एक और सुपरस्टार थलापति विजय की मोस्ट अवेटेड फिल्म 'जन नायकन' रिलीज होगी। यह विजय के फिल्मी करियर की आखिरी फिल्म होगी। इसके बाद वह अपना पूरा समय राजनीति में देंगे। इस फिल्म में विजय के साथ बॉबी देओल और पूजा हेगड़े भी दिखेंगे।

आएंगे कई सुपरहिट फिल्मों के सीक्वलः किसी भी सुपरहिट फिल्म के सीक्वल को प्रायः सफलता की गारंटी माना जाता है। इस साल भी कई सफल फिल्मों के सीक्वल सिने प्रेमियों को देखने को मिलेंगे। जेपी दत्ता की ब्लॉकबस्टर फिल्म 'बॉर्डर' का सीक्वल 'बॉर्डर 2' इसी महीने 23 जनवरी को रिलीज हो रहा है। फिल्म की मुख्य भूमिकाओं में सनी देओल, वरुण धवन, दिलजीत दोसांझ, अहान शेट्टी नजर आने वाले हैं। बीते दिनों सनी देओल की 'गदर 2' ने खूब कमाई की थी। कुछ ऐसी ही उम्मीद 'बॉर्डर 2' से भी की जा रही है। यह देखना दिलचस्प होगा कि अनुराग सिंह के निर्देशन में बनी 'बॉर्डर 2' की कहानी दर्शकों को थिएटर तक खींच पाती है या नहीं? आदित्य धर निर्देशित 'धुरंधर' का सीक्वल 'धुरंधर 2' 19 मार्च को बड़े पर्दे पर आएगी।

इसी साल सुपरहिट फिल्म 'एनिमल' का भी सीक्वल 'एनिमल पार्क' रिलीज होने जा रही है, जिसका दर्शकों को बेसब्री से इंतजार है। 'एनिमल' के पोस्ट-क्रेडिट सीन में दिखाई गई कहानी को आगे बढ़ाते हुए 'एनिमल पार्क' में और भी ज्यादा थ्रिल और इमोशन दिखाए जाने की उम्मीद है।

इन फिल्मों से भी हैं बड़ी उम्मीदेंः इस साल रिलीज होने वाली संजय लीला भंसाली की फिल्म 'लव एंड वॉर' से भी काफी उम्मीदें हैं। फिल्म में रणबीर कपूर, आलिया भट्ट और विक्की कौशल लीड रोल में हैं। फिल्म 14 अगस्त 2026 को सिनेमाघरों में दस्तक देगी।

रणबीर कपूर, साई पल्लवी, सनी देओल और यश की मुख्य भूमिका वाली बिग बजट फिल्म 'रामायण' का भी इस साल दर्शकों को बेसब्री से इंतजार रहेगा। दो पार्ट में रिलीज होने वाली 'रामायण' का पहला पार्ट इसी साल दिवाली पर रिलीज होने की उम्मीद है। नितेश तिवारी द्वारा निर्देशित इस फिल्म में रणबीर कपूर भगवान राम, साई पल्लवी माता सीता, सनी देओल हनुमान जी और यश रावण की भूमिका में नजर आने वाले हैं।

आएंगी सलमान-शाहरुख की फिल्मेंः इस वर्ष लगभग तीन साल बाद शाहरुख खान अपनी अगली फिल्म 'किंग' के साथ बड़े पर्दे पर नजर आने वाले हैं। सिद्धार्थ आनंद निर्देशित 'किंग' में शाहरुख अपनी बेटी सुहाना के साथ पहली बार दिखेंगे। इसके अलावा सलमान खान की 'बैटल ऑफ गलवान' 2020 में भारत और चीन के बीच हुए गलवान घाटी संघर्ष पर आधारित फिल्म है। अपूर्व लाखिया द्वारा निर्देशित इस फिल्म को सलमान खान फिल्म्स बैनर तले प्रोड्यूस किया जा रहा है। फिल्म का टीजर रिलीज होने के बाद से दर्शकों में इस फिल्म को लेकर काफी उत्साह है। *